

श्रद्धा-विज्ञान-प्रवर्तक

जैन-विवाह-संस्कार

अचल सौभाग्याकांक्षिणी

कुमारी कनकलता बैनाड़ा

के

शुभ विवाहोपलक्ष में

स्वजाति बन्धुओं को भेंट।

मटरूमल बैनाड़ा

प्रकाशक—
सेठ मटरूमल बैनाड़ा (राय साहब)
प्रो० मथुरादास पन्नचन्द, बैंकर्स
बेलनगंज, आगरा।

प्रथम बार १००० प्रति
वीर निर्वाण २४६२

मुद्रक—
दी कौरोनेशन प्रेस,
३७६३, शीतलागली,
आगरा।

आद्य निवेदन

हमारी बहुत समय से अभिलाषा थी कि जैन संस्कारों और वर्तमान जैन समाज के रीति रिवाजों को ध्यान में रखते हुए एक ऐसी 'जैनपद्धति' के अनुसार विवाह संस्कार कराने की पुस्तक तैयार की जाय जिससे सर्वसाधारण भाई भी सुगमता और सुभीते के साथ इस कार्य को कर सकें। इसके लिए स्व० विद्वद्वर्य पं० नृसिंहदासजी वैदिय चावली (आगरा) निवासी हमें अपने जीवनकाल में ही कुछ साहित्य लिखकर दे गये थे, उसके और जयपुर निवासी श्री० पंडितवर्य छुट्टनलालजी द्वारा सगृहीत जैन विवाह पद्धति के आधारों से हमें प्रस्तुत पुस्तक को तैयार करने में बहुत सहायता मिली है अस्तु हम उन दोनों ही विद्वानों के बहुत आभारी हैं।

पिछले दिनों में हमारी ओर से 'जैनविधि मुहूर्त पूजा' और 'जैनव्यापारपद्धति' नामक दो पुस्तके प्रकाशित हो चुकी हैं। जैनसमाज ने दोनों ही पुस्तकों को अपनाकर अपने धार्मिक श्रद्धान में पर्याप्त वृद्धि की है और मिथ्यात्व का परित्याग किया है। अब इस पुस्तक में 'विनायक विधान, से लेकर विवाह पर्यन्त' सभी कार्यों का क्रमपूर्वक खुलासा किया गया है। विवाह कार्य के लिए उचित सामग्री, विवाह कार्य-क्रम, वेदी आदि के नक़शे सचित्र इस पुस्तक में दिये गये हैं जिन्हें देखकर साधारण भाषा जानकार भी विवाह कार्य को सरलता से सम्पादित कर सकेंगे। इस कार्य को करने के पूर्व एक बार पुस्तक विधि और उसके योग्य सामग्री को अवश्य अवश्य अवलोकन कर लेना चाहिए।

प्रस्तुत पुस्तक को संगृहीत करते समय इसकी उपयोगिता, द्रव्य, क्षेत्र और काल की ओर विशेष ध्यान रक्खा गया है, क्योंकि प्रचलित कई विवाह पद्धतियाँ तो इतने विस्तार से लिखी गई हैं कि उनके अनुसार कार्य करने में अधिक आकुलता हो जाती है, और कई इतनी संक्षिप्त हैं कि उनमें पूर्ण विधि भी नहीं हो पाती है। अतः विवाह के प्रत्येक अङ्ग की विधि को बताते हुए एवं यथावसर मंत्रों का शुद्ध प्रयोग दिखाते हुए शास्त्रोक्त क्रिया-कलाप का इसमें प्रतिपादन किया है। आशा है सभी धर्मात्माबन्धु इस पुस्तक से समय पर लाभ उठाते हुए जैनधर्म की प्रभावना करेंगे।

यद्यपि प्रयत्न तो यही किया गया है कि पुस्तक में अशुद्धियाँ और त्रुटियाँ न रह फिर भी यदि कहीं होगई हों तो विद्वद्गण उनका शोधन कर काम में लावें।

"पद्म कुटीर" }
वी० नि० २४७२ }

जिनधर्माराधक—
भटरूमल बैनाड़ा

दो शब्द।

किसी भी धर्म और जाति के सांस्कृतिक संरक्षण के लिये अत्यावश्यक यह है कि उसके धार्मिक, सामाजिक, लौकिक सिद्धान्तों और रीति रिवाजों का अधिक रूप से प्रचार किया जाय। प्रस्तुत पुस्तक इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए श्रीमान् राय साहब सेठ मटरूमलजी बैनाड़ा (फ़र्म सेठ मथुरादासजी पदमचन्दजी बैनाड़ा आगरा) ने अपनी ज्येष्ठ पुत्री चिरंजीविनी कनकलता के शुभ विवाह उपलक्ष में स्वद्रव्य से प्रकाशित कर वितरण की है। उक्त सेठ साहब की आन्तरिक भावना रही है कि जैनसमाज में संस्कृति की रक्षा के लिये ऐसा साहित्य समय २ पर प्रकाशित किया जाय जो ग्राम २ और नगर २ में जैन धर्म की प्रभावना कर सके। मेरा ध्यान है कि कुछ समय पूर्व तक विवाह सदृश गृहस्थ के धार्मिक संस्कार भी अन्य पंडितों द्वारा किये जाते थे और वे अब भी यत्र तत्र होते ही हैं, परन्तु इन कार्यों को शास्त्रोक्त विधि से सम्पन्न किया जाय और मिथ्यात्व से बचकर जैन संस्कार से विवाह विधि की जाय, यही इस पुस्तक को प्रकाशित करने का भाव है।

इस पुस्तक के संशोधन का भार उक्त सेठ साहब ने मुझे सौंपा और अपने द्वारा तैयार कराई हुई एक कच्ची प्रति को मेरे पास भेज भी दिया। मैंने उपलब्ध प्राचीन और नई प्रतियों के आधार से इसे प्रामाणिक रूप से संशोधित किया है। यह पुस्तक कितनी उपयुक्त और प्रामाणिक है, इसका तो जैन समाज उपयोग कर ही निर्णय कर सकेगी।

अजमेर
अक्षय तृतीया
वी० सं० २४७३

जैनधर्म-सेवक
हेमचन्द्र कौंदेय, शास्त्री

वेदीकीरचना

प्रथम (सबसे ऊपर की) कटनी पर सिद्ध यंत्र स्थापित करना।

दूसरी (बीच की) कटनी पर शास्त्र जी स्थापन करना।

तीसरी (नीचे की) कटनी पर अष्ट मंगल द्रव्य स्थापित करना।















तीसरी कटनी के नीचे वेदी पर











चतु षष्ठि यंत्र



सिद्धयंत्र

या

(विनायक यंत्र)



सूचना

यह यंत्र यदि समय पर बनाबनाया न मिले तो केशर से – रकाबी पर बनाकर स्थापन कर देना चाहिये ।



विवाह-कार्य के लिये आवश्यक वस्तुएँ।

विवाहमंडल, संस्कार-वेदिका, स्तम्भद्व, हवनकुंड, त्रिकटिनी-वेदिका ॥

[इनको निर्माण करने का खुलासा पृष्ठ ७ पर देखिये]

अष्टमंगल द्रव्य [झारी, पंखा, कलश, ध्वजा, चमर, ठौना, छत्र और दर्पण]

[ये चीजें मौजूद न हों तो रकाबी में केशर से लिख कर इनकी रचना करनी चाहिये]

धर्मचक्र—तीन गोल चक्र में २४ ध्वजा लगी हुई ।

छत्रत्रय—तीन छत्र।

सिंहासन २—

जैन हस्त लिखित-शास्त्र महापुराण आदि ।

यन्त्र—विनायक यंत्र और चौसठ ऋद्धि यन्त्र ।

[यदि यन्त्र न मिल सकें तो आगे चित्रित यंत्र रकाबी में लिख लेना चाहियें ।

पूजन के बर्तन और अष्ट द्रव्य बनी हुई [शक्त्यनुसार] हवन सामग्री–तिल, बादाम की गुली, किशमिश, गोले के चूर्ण चिरौंजी, छुहारा सुगंधवाला, देवदारु, बूरा, कपूर, चन्दन चूरा [ये सब चार्जें ११ सेर लेना चाहिये और इसी अन्दाजे १ घी शुद्ध लेना चाहिये]

समिधि–आक, ढाक, आम, पीपल, बड़ की सूखी घुन रहित लकड़ी, सफेद चन्दन लाल चन्दन की पतली लकड़ियाँ।

अन्य चार्जें–धातु व काठ के, (वर कन्या के हाथ से एक हाथ के) हवन द्रव्य के दो पात्र, मढ़ी छोटी ४, रोली, हल्दी, दूर्वा, डाभ, कलश छोटे ४, कलश बड़ा १ सेर जल का, यज्ञोपवीत ४, छहर १ गज, आसन कुशा के ५ फूलमाला १०, बड़ी फूलमाला ४ जवाली १, श्रीफल २, दीपक ८, दियासलाई, कपूर, रुई, आम और अशोक के पत्ते, सुपारी, पचरत्नी (पाच रत्न) सरसों पीली, धान की खीलें, चमर, पूजन के बर्तन, थाल २, मारी १, चन्दाइ १, सूटियाँ १२, अतर बत्ती, धूप, आरती का थाल १, मेहंदी।

नोट–उपरोक्त सामग्री ठीक तरह से शुद्ध एकत्रित कर लेनी चाहिये। यदि कुछ देशकालानुकूल अन्तर हो तो विधि विधान का ध्यान रखते हुए परिवर्तन कर लेना चाहिये।

परिशिष्ट।

कुंभकलश या मंगल कलश—यह सोना, चांदी, पीतल, तांबा आदि का घटाकार पात्र होना चाहिये। इसमें आगे बताये हुए मन्त्र द्वारा लवंग आदि से प्रासुक जल भर कर उसे श्रीफल और केशरिया वस्त्र द्वारा ढक देवे और उसमें नवरत्न, अक्षत, पुष्प, बिजौरा आदि डाल देवें। बाद में इसे पुष्पमाला, आम के पत्ते दूर्वा, डाभ, स्वस्तिक आदि से सुशोभित करे।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते पद्म महापद्म तिगिंछिकेसरि पुण्डरीक महापुण्डरीक गंगासिन्धुरोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीतासीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्णरूप्यकूला रक्तारक्तोदापयोधि शुद्धजलसुवर्णघट प्रक्षालित नवरत्नगंधाक्षतपुष्पार्चितमामोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झ्रौं झ्रौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

विवाह आदि कार्यों में कलश की स्थापना कुछ देर के लिये की जाती हो तो उसमें पानी न भरना चाहिये। यह कलश पुण्याहवाचन सङ्कल्प, शान्ति धारा इन कार्यों के काम में आता है।

रक्षा-कङ्कण—सामान्यत यह कंकण मंगलसूत्र (कलावा) अथवा रत्न आदि का होता है। परन्तु विशेषत केशरिया

लाल वस्त्र में अक्षत, राई, लोहा, चांदी या तांबा आदि का कण लेकर एक छोटी पोटली मंगलसूत्र से अच्छी तरह बांध लेनी चाहि और उसे वर कन्या के क्रमशः दांये और बांये हाथ में बांध दें चाहिये। यह रक्षाबन्धन वर कन्या के दैनिक जैन षट्कर्म करने की प्रतिज्ञा का चिह्न है और इसका प्रयोजन दीक्षित करने का है इसमें छह गांठ देने का भी प्रथा प्रचलित है।

विवाह कार्य-क्रम।

मंगलाचरणपूर्वक विवाह प्रयोजन।
विनायक विधान
द्वितीय विनायक
मण्डपसंस्कार या विवाहमण्डप निर्माण
भाण्डानयन
संस्कार-वेदी निर्माण
त्रिकटिनी वेदी निर्माण
कुण्ड निर्माण
ध्वजदण्ड स्थापन
बरयात्रा गमन
अलूफा
तोरण विधान
वर आगमन

अन्याङ्गनापरिहृते निजदाररत्या ।
धर्मो गृहस्थजनता विहिताऽप्यपास्तेऽ
नादिप्रवाह इति सन्ततिपालनार्थं
येन कृतौ मुनिवृषौ विहितादरः स्यात् ॥२॥

कर्मभूमि के प्रारम्भ में श्री नाभिराय के पुत्र जिन श्री १००८ ऋषभ तीर्थंकर भगवान् ने सद्गृहस्थों के लिये षट्कर्म सहित जो गृहस्थधर्म का मार्ग बताया वे सदैव पूज्य एवं जयवन्त रहें। श्री १०८ जिनसेन स्वामी ने सनातन प्रवृत्ति के अनुसार, मन्त्र समुदाय सहित जिस जैन विवाह पद्धति का वर्णन किया है वे जिनसेनाचार्य भी जयवन्त रहें। सभी परस्त्रियों के त्याग सहित केवल अपनी परिणीता स्त्री में विषय भोगों का नियत रखना विवाह है और गृहस्थ के लिये शास्त्र विहित है, इससे सन्तति परम्परा चलती है और वह गृहस्थ मुनिधर्म में आदरवान होता है।

विनायक विधान।

यह विनायक विधान लग्न का कार्य होने पर किया जाता है। यह सम्पूर्ण विघ्नों का नाश करने वाला और सभी मंगलों का देने वाला है। विवाह के पाँच या सात दिन पहिले किसी शुभ दिन में वर या कन्या अपने कुटुम्बी और सम्बन्धियों के साथ मय गाने बाजे के श्रीमन्दिरजी जावें और विवाह कार्य के निर्विघ्न समाप्त होने के लिये श्रीजिन देव और सिद्धयन्त्र का अभिषेक सहित पूजन करें और जिन सहस्र नाम का पाठ कर अर्घ्य चढ़ावें। यह कार्य या तो वह स्वयं करें अथवा किसी दूसरे के द्वारा अपनी उपस्थिति में करावें। पूजन के उपरान्त नीचे लिखे अपराजित मन्त्र का १०८ बार जाप करें।

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरीयाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

इसके बाद वर या कन्या बड़ी भक्ति के साथ नमस्कार कर गाजे बाजे और सौभाग्यवती स्त्रियों के साथ मंगलगान करते हुए यन्त्र को पालकी आदि में विनयपूर्वक विराजमान कर अपने घर लावें और वन्दनवार, पुष्पमाल तथा अन्य वस्तुओं से सुशोभित कर किसी घर में उच्च स्थान में उसे विराजमान कर दें। जब तक विवाह कार्य समाप्त न हो जाय तब तक उसका अभिषेक व पूजन स्वयं करें या दूसरों से अपनी मौजूदगी में करावें। इसी स्थान पर एक अखंड दीप निम्नलिखित मन्त्र पढ़ कर स्थापित करें।

ॐ ह्रीं अज्ञान तिमिरहर दीपक संस्थापयामि स्वाहा।

और परिशिष्ट में बताये हुए ढंग से मंगल कलश बना कर नीचे लिखा मन्त्र पढ़ कर कलश स्थापन कर दें।

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणो मते अस्मिन् विधीयमान विवाहकर्मणि होममण्डप भूमि शुद्ध्यर्थं पात्रशुद्ध्यर्थं क्रियाशुद्ध्यर्थं शान्त्यर्थं पुण्याहवाचनार्थं नवरत्न पुष्पाक्षत् बीजपूरशोभित शुद्धप्रासुक तीर्थजल पूरितं मंगल कलश संस्थापनं करोम्यहम् झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा।

बाद में रक्षाकंकण को विधिपूर्वक तैयार कर सुवासिनी द्वारा वर कन्या के हाथ में नीचे लिखे श्लोक व मन्त्र पढ़ कर बँधवा देवें या गृहस्थाचार्य खुद बाँध देवें।

जिनेन्द्रगुरुपूजनं, श्रुतवचः सदाधारणम् ।
स्वशीलयमरक्षणं, ददनसत्तपाऽवृंहणं ॥
इति प्रथित षट् क्रिया निरतिचारमास्तांतवै ।
त्वय प्रथनकर्मणे विहितरक्षिकाबन्धनं ॥

ॐ जायापत्योरेतयो गृहीतपाण्योरेतस्यात्पर आ चतुर्थाद्
आहोस्विदासप्तमादिव्या परमस्यपुरुषस्य गुरुणानुपालित,
देवानामर्येनाभिरेषु सत्कारोऽभ्यागतानामिथाणन यनीय-
कानांइत्येव विधातु मतीज्ञाया सूत्र कङ्कणसूत्र व्यपदेशभाक्
रजनीसूत्र मिथोपणिबन्धे प्रणश्यते स्वाहा ।

यह सब कार्य समाप्त होने पर आये हुए सज्जनों का सत्कार एवं दान करना चाहिये यथासम्भव जागरण करना चाहिये ।

द्वितीय विनायक

यह कार्य प्रथम विनायक के बाद और विवाह के पूर्व करना चाहिये किसी शुभदिन में वर या कन्या को उबटन स्नानादि कराकर घर में स्थापित विनायक यन्त्र का शुद्धिपूर्वक अभिषेक पूजन से स्वयं करें या अपने समक्ष में दूसरों के द्वारा करावें और उसी स्थान पर १०८ बार अपराजित मंत्र का जाप करें। इसके बाद में वर या कन्या वस्त्राभूषणों से सुसज्जित सौभाग्य वती स्त्रियों के साथ गाजे बाजे से मंगलगान गाते हुए उपयुक्त सवारी में बैठकर अष्टद्रव्य सहित श्रीफल लेकर श्रीमन्दिरजी जावें और भक्तिपूर्वक मंगलमय स्तुति पढते हुए अर्घ्य चढावें। यदि सावकाश हो तो अभिषेक और पूजन भी करें। इसके बाद पूर्व की तरह वापिस निज घर आ जायें और विनायकयन्त्र के पुनः कङ्कण बधावें।

नोट—यदि कारणवश प्रथम विनायक को किया उस दिन न हो पाई हो तो कुल उस दिन का कार्य इस दिन कर लेना चाहिये।

गृह-संस्कार

जहाँ विवाह कार्य हो वहां कल्पवृक्ष, गाढ़ाग्नि पुष्पमाला, स्तूप, चन्द्र, सूर्य, लक्ष्मी आदि मांगलिक चित्र आदि की रचना करे और नवीन वस्त्र आदि से विवाह मंडप आदि का निर्माण करे, जिससे अन्य पुरुषों को भी विवाह की जानकारी हो जाय। इसही दिन अर्थात् द्वितीय विनायक के दिन ही विवाह मंडप, तोरण ध्वजस्तम्भ, संस्कारवेदिका, हवनकुण्ड आदि की रचना करनी चाहिये और उसे कदलीस्तम्भ, इक्षुदण्ड आदि से सुशोभित कर देना चाहिये।

भाण्डानयन

यह कार्य भी द्वितीय विनायक के दिन ही कन्यापक्ष वालों को करना चाहिये। भाण्डानयन का प्रयोजन चवरी के लिये मृत्तिका (मिट्टी का) बर्तन लाने का है। इसके लिये सौभाग्यवती स्त्रियाँ कुम्भकार के यहाँ जावें और वहाँ से २० बड़े छोटे चवार के घट और एक छोटा घट थाम के लिये लावें। कुम्भकार को इसके लिये समुचित वस्त्र एवं नकद द्रव्य देकर सन्तुष्ट करें और वहाँ से लाकर बर्तनों को सुरक्षित स्थान पर रक्खें। बाद में उनमें सुपारी, हल्दी, अक्षत, मूंग, धान आदि डालकर घटों पर मांगलिक स्वस्तिक चिन्हादि आदि बनाकर वेदिका के चारों ओर पांच पांच बर्तन रखने के काम में तथा एक घट ध्वजस्तम्भ पर रखने के काम में लावें।

नोट—इन घटों की बाबत कुम्भकार को पूर्व में ही सूचना कर देनी चाहिये जिससे समय पर कार्य में अड़चन न हो। यदि वहाँ कुम्भकार के घर पर जाने की सुविधा न हो तो कुम्भकार द्वारा लाये हुए बर्तनों को घर के बाहर से ही सौभाग्यवती स्त्रियाँ ले लें और कुम्भकार को यथोचित वस्त्र आर भेट दे दें।

सरकार वेदिका

विवाह मंडप के ठीक मध्य में कन्या के हाथ से चार हाथ प्रमाण लम्बी चौड़ी और एक हाथ ऊंची कच्ची ईंट गारे से वेदी बनवाना चाहिये। इसके चारों कोनों पर भाण्डानयन क्रिया में लाये हुए २० घटों का एक एक कोने पर पांच पांच रख कर उन्हें लाल या केशरिया वस्त्र से ढक देना चाहिये। ध्यान रहे कि घट इतने सुरक्षित रक्खे जाय कि वे गड़बड़ाय नहीं। वेदी का चँदोवा, चित्र, गोटा आदि से चित्ताकर्षक बनाकर सुशोभित कर देना चाहिये। वेदी के चारों कोनों पर कदली स्तम्भ और इक्षुदण्ड वन्दनवार पुष्पमाला भी लगा देनी चाहिये।

इस वेदी पर ही वैवाहिक सब कार्य होता है। इस पर वर कन्या, गृहस्थाचार्य, वर कन्या के मामा तथा पिता एवं दोनों की माताओं को ही आने का अधिकार है। इस ही वेदी पर नीचे लिखे अनुसार त्रिकटिनी वेदी, हवनकुण्ड और ध्वजदण्ड का निर्माण करना चाहिये।

त्रिकटिनी वेदी

यह वेदी सरकार वेदिका के ऊपर उत्तर या पूर्वमुखी एक हाथ लम्बी चौड़ी एवं ऊंची होनी चाहिये। इसकी ऊंचाई में तीन कटिनी सममाग की बनाना चाहिये जिन पर ऊपर वाली पर सिद्धविनायक यंत्र, दूसरी पर शास्त्र और तीसरी पर द्रव्य और चौसठऋद्धि यंत्र विराजमान करना

चाहिये। इसी कटिनी पर दक्षिण भाग में धर्मचक्र और वाम भाग में छत्र-त्रय स्थापित करना चाहिये।

नोट—यदि वेदी आदि को पीले रंग से रँग दिया जाय तो अत्युत्तम है।

हवनकुण्ड

सत्कार वेदी के ऊपर तथा त्रिकटिनी वेदी के दक्षिण भाग या सन्मुख एक हाथ स्थान छोड़ कर निम्नप्रकार तीन कुण्ड की रचना करनी चाहिये।

त्रिकटिनी वेदी से एक हाथ आगे मध्य में चौकोण तीर्थंकर कुण्ड तथा इसके दक्षिण भाग में सामान्य केवली कुण्ड त्रिकोण और वाम भाग में गोल गणधरकुण्ड बनाना चाहिये। हवन कुण्डों के बाहरी ओर तीन तीन कटनियाँ नीचे से ऊपर को ५, ४, ३ अंगुल चौड़ी ऊंची बनानी चाहियें। कुण्ड के भीतरी भाग की दीवारों को बराबर रखना चाहिये। प्रत्येक कुण्ड के अन्तराल में चार चार अंगुल का स्थान छोड़ देना चाहियें।

कुण्ड के चारों किनारों पर प्रत्येक कटिनी में सूत्र वेष्टन के लिये मरवीदार पतली खूटियाँ बनते समय ही लगा देना चाहिये।

कुंड की रचना करते समय रोली से उसे रंग देना आवश्यक है। बाद में दिग्पालों के स्थापनार्थ एक एक दिशाओं और विदिशाओं में अक्षत के और पुष्पों के पुंज रख कर उनके ऊपर एक एक सुपारी रख देना चाहिये। बाद में तीन बार सूत्र वेष्टन कर देना चाहिये। कुण्ड के चारों किनारों पर अक्षत के पुंज बना कर एक एक लघुकलश सर्वौषधि मिश्रित जल से भरा हुआ, केशरिया वस्त्र से आवृत्त कर स्वस्तिक, पुष्प, सुपारी से सुशोभित कर रखना चाहिये। कुण्ड के चारों किनारों पर दीप और धूपदान का रखना भी आवश्यक है।

नोट—यदि वेदी पर तीन कुण्डों के बनाने का योग

की ध्वनि के साथ कुटुम्बीजन तथा अन्य सम्बन्धियों के सहित बरात लेकर कन्या के घर के लिये रवाना हो जाय।

मलूफा

जिस समय बरात कन्या के घर पर आती है उस समय कन्या पक्ष वालों को तोरण के पूर्व, तोरण निमन्त्रण के लिये यह कार्य करना चाहिये। बरात के आने पर कन्या का पिता और अन्य कुटुम्बीजन गाजे बाजे के साथ बरात निवास-स्थान (जनिवासा) पर जावें साथ में लिये हुए मंगलसूचक सामिग्री मिष्ठान्न, व्यञ्जन और कलश को तिलक मन्त्र से सुवासी द्वारा तिलक कराकर वर की भेंट करें। इस समय कन्यापक्षीय सज्जन, वरपक्ष वालों से अति नम्र शब्दों में अति हर्ष के साथ तोरण के लिये पधारने के लिये निवेदन करें।

नोट—इस समय दोनों ही पक्ष वालों को चाहिये कि वे आपसमें एक दूसरे का ताम्बूल, सुपारी आदि द्वारा सत्कार करें। प्रचलित प्रथा के अनुसार कन्या का पिता वर के पिता को भेंट दे।

नोट—तिलक मन्त्र=मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमोगणी।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैन धर्मोस्तु मंगलं॥

तोरण विधान

तोरण विधान का अर्थ द्वार स्पर्श (दरवाजा छूना) है। इस कार्य को सुविधानुसार विवाह के एक दिन पूर्व या उसी दिन करना चाहिये। वर अपनी सज्जित बरात के साथ श्वसुर के गृह पर आवे और अनेक शुभ बन्दनवारादि से सुशोभित घर के द्वार के मध्य में लगे हुए मंगलमय तोरण का स्पर्श करे।

इसके बाद वस्त्रालंकार से भूषित, हर्षोल्लास से पूरित होकर वर की सास वर के ऊपर अक्षत और पुष्प की अंजलि क्षेपण करे और पुष्पाक्षत, दूर्वा, रत्न, दीप आदि आरते के थाल में रख कर वर का आरता उतारे और उसे भेंट देवे। इसी समय अन्य सभी स्त्रियां, जिनमें कन्या भी हों मंगलगान करती हुई वर को निरखे और आशीर्वादात्मक वर के मस्तक के ऊपर पीलों तथा पुष्पाक्षतों की वर्षा करे। कन्या का पिता आये हुए सज्जन बरातियों का पान, फूलमाला आदि से सत्कार करे। बाद में वर और बरातीजन पूर्ववत गाजे-बाजे के साथ अपने निवास स्थान पर आ जावें। बरात के लौटते समय कन्या पक्ष वाले कुछ दूर तक उन्हें पहुँचाने जावें।

वर-आगमन

पाणिग्रहण के निश्चय किये हुए शुभ मुहूर्त से कुछ समय पूर्व उबटन आदि से स्नान करा कर वस्त्रालंकारों से अलंकृत हो कर वर गाजे बाजे के साथ सवारी में बैठ कर श्रीजिन मन्दिर दर्शनार्थ जावे और विनयपूर्वक श्रीफल चढावे, भेंट देवे और बाद में श्वसुर-गृह के लिये प्रस्थान करे।

वर को आता हुआ जान कर कन्या की माता सौभाग्यवती स्त्रियों के साथ उत्साहसहित शीघ्र वर के सन्मुख आकर और उसके पाद प्रक्षालन कर आरता उतारे, शक्ति के अनुसार वर को भेंट देवे और वर को घर मे प्रवेश करा कर विवाह-मंडप में उच्च स्थान पर बैठा देवे।

इस समय के पूर्व कन्या को स्नान आदि करा कर वर पक्ष से आये [illegible] भूषणों से सुसज्जित कर दे

रखना चाहिये। पीछे कन्या का मामा वर को विवाह वेदी पर यथास्थान बैठावे तथा कन्या को भी लाकर वर के दक्षिण भाग में बैठा देवे।

विवाह-विधान

विवाह का अर्थ पाणिग्रहण या फेरा है, यह अत्यन्त शुद्ध और महत्त्वपूर्ण कार्य है, इसलिये इसके सम्पादन करने का मुहूर्त लग्न आदि शुभ्रवा लेना अत्यावश्यक है।

परिशिष्ट में बताई गई विधि के अनुसार मंगल-कलश तैयार कर विनायक के दिन लिखे मन्त्र का उच्चारण कर वेदी के आगे इसे विराजमान कर देना चाहिये।

रक्षाबन्धन मंत्र

ॐ णमो अरहंताणं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मन्त्र बोल कर गृहस्थाचार्य मंगलसूत्र वर कन्या के हाथ में बांध देवे।

दीपप्रज्वालन मंत्र

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहर दीपक संस्थापियामि स्वाहा।

यह मन्त्र बोल कर दीपक स्थापित करे।

तिलक मंत्र

मंगलं भगवानवीरो, मंगलं गौतमागणी.।
मंगलं कुन्दकुन्दाद्यो, जैनधर्मोस्तु मंगलं॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उसा अस्यसर्वाङ्ग शुद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

यह मन्त्र बोल कर गृहस्थाचार्य वर और कन्या के तिलक करे।

परिणयन वाक्य

इसके उपरान्त वर कन्या श्रीसिद्धयन्त्रराज, शास्त्र आदि जो वेदिका में विराजमान हैं उन्हें नमस्कार करें और सुख-प्राप्ति के लिये वर-कन्या परस्पर में मुखावलोकन कर कन्या वर के गले में पुष्पमाला पहनावे।*

इसके बाद प्रथम कन्या का मामा और पीछे पिता और कुटुम्बीजन वर से कहें कि हम यह कन्या आपको सेवा के लिये प्रदान करते हैं, आप इसे स्वीकार करें। इसके उत्तर में वर कहे 'वृणोऽहं' अर्थात् मुझे स्वीकार है। पीछे कन्या का पिता कहे कि 'इसका धर्म से पालन करना'। इसके उत्तर में वर श्रीसिद्धयन्त्र को नमस्कार कर कहे कि "मैं धर्म, अर्थ और काम से पालन करूंगा।"

संकल्पधारा

कन्या का पिता वर के हाथ पर बारीक जल की धारा संकल्पमन्त्र के उच्चारणपूर्वक देवे।

स्वस्तिश्री यजमानाचार्य प्रभृति भव्यजनानां सद्धर्मश्री बलायुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्धिरस्तु, अद्यभगवतो महापुरुषस्य

* नोट—इस समय यदि आवश्यक हो तो वेदिका के चारों ओर आवरण कर लेना चाहिये।

श्रीमदादिब्रह्मणोमते मध्यमलोके जम्बूद्वीपान्तर्गतद्वीप मेरोर्दक्षिणे भारतवर्षे आर्यखण्डे प्रतिपन्न विनय जनताभिसये अत्र नाम्निनगरे मदीय हर्म्ये एतद्‌ वसर्पिणी कालावसानप्रवर्तमान कलियुगाभिधान पंचमकाले प्रथमपादे महति महावीरतीर्थंकरापन्तिए सद्धर्मव्यतिकरे श्री गौतमस्वामिप्रतिपादित सन्मार्गप्रवर्तमाने श्रेणिकमहाराज मण्डलेश्वर समाचरितसन्मार्गविशेषे वि० स० प्रवर्तमाने उत्तरायणे महामंगलमासे पक्षे शुभ तिथौवासरे नक्षत्रे शुभलग्नउत्पद्महामंगलद्रव्य शोभित श्रीपञ्चराजसन्निधौ, शारदासन्निधौ, परमधार्मिक जनता विद्वत्समाजसन्निधौ, अस्मिन् महामंगलमयस्वात्मज विवाहोत्सवे अहं नामा वंशोद्‌भवो गोत्रजो श्री श्रेष्ठिन प्रपौत्रो श्री श्रेष्ठिन. पौत्रो मम पुत्री नाम्नी इमां कन्यां वंशोद्‌भवाय गोत्रजाय अस्य प्रपौत्राय अस्य पौत्राय अस्य पुत्राय श्री चिरंजीविने नामधेयाय अस्मै वराय कुमाराय समर्पयाम्यहं, सुगन्ध जलधारापातन पूर्वक ददामि ह्रूं ह्रौं ह्रः प्र स्वाहा ।

इस प्रकार सुगन्ध जल की सकल्पधारापूर्वक कन्या का पिता कन्या को प्रदान करे और उपस्थित सौभाग्यवती स्त्रियां वर कन्या के मस्तक पर मंगलरूप अक्षतों का क्षेपण करें ।

५

देव शास्त्र गुरु पूजा

ॐ जय जय जय नमोऽस्तु, नमोऽस्तु, नमोऽस्तु णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं। ॐ अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः [पुष्पांजलि क्षेपण करना] चत्तारिमंगलं, अरहंतमंगलं, सिद्धमंगलं, साहूमंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मोमंगलं चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंतलोगुत्तमा, सिद्धलोगुत्तमा, साहूलोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मोलोगुत्तमा। चत्तारि शरणं पव्वज्जामि अरहंतशरणं पव्वज्जामि, सिद्धशरणं पवज्जामि साहु शरणं पव्वज्जामि, केवलि पण्णत्तो धम्मोशरणं पव्वज्जामि। ॐ नमो अर्हते स्वाहा।

(यहाँ पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिए।)

अपवित्रः पवित्रोवा सुस्थितो दुःस्थितोऽपिवा।
ध्यायेत्पञ्चनमस्कार सर्व पापैः प्रमुच्यते ॥१॥
अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः ॥२॥
अपराजितमंत्रोऽयं सर्वविघ्नविनाशन.।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मङ्गलं मतः ॥३॥
एसो पंचणमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं होइ मंगलं ॥४॥

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः ।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहम् ॥५॥
कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मीनिकेतनम् ।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहम् ॥६॥

(यहाँ पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिये ।)

(यदि अवकाश हो तो सहस्रनाम पढ़कर दश अर्घ्य चढ़ाने चाहिएँ या नीचे लिखा हुआ एक श्लोक पढ़कर अर्घ्य चढ़ाना चाहिए)

उदकचन्दनतन्दुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः ।
धवलमङ्गलगानरवाकुले जिनगृहे जिननाथमहं यजे ॥

ॐ ह्रीं भगवज्जिनसहस्रनामेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

श्रीमज्जिनेन्द्रमभिवन्द्य जगत्त्रयेशं
स्याद्वादनायकमनन्तचतुष्टयार्हम् ।
श्रीमूलसङ्घसुदृशां सुकृतैकहेतु
र्जैनेन्द्रयज्ञविधिरेष मयाऽभ्यधायि ॥८॥
स्वस्ति त्रिलोकगुरवे जिनपुङ्गवाय
स्वस्ति स्वभावमहिमोदयसुस्थिताय ।
स्वस्ति प्रकाशसहजोर्जितदृङ्मयाय
स्वस्ति प्रसन्नललिताद्भुत वैभवाय ॥९॥
स्वस्त्युच्छलद्विमलबोधसुधाप्लवाय
स्वस्ति स्वभावपरभावविभासकाय ।
त्रिलोकविततैकचिदुद्गमाय
त्रिकालसकलायतविस्तृताय ॥१०॥

द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्य यथानुरूपं
भावस्य शुद्धिमधिकामधिगन्तुकामः ।
आलम्बनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्
भूतार्थयज्ञपुरुषस्य करोमि यज्ञम् ॥११॥
अर्हत्पुराणपुरुषोत्तमपावनानि
वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव ।
अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवलबोधवह्नौ
पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि ॥१२॥

(यहां पुष्पांजलि क्षेपण करना ।)

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः ।
श्री संभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः ॥
श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः ।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः ॥
श्री श्रेयान्स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः ।
श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः ।
श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शान्तिः ।
श्री कुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरनाथः ॥
श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः ।
श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री
श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री

नित्याप्रकम्पाद्भुत केवलौघाः स्फुरन्मनः पर्यय शुद्ध बोधाः। दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥१॥

[आगे प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिए]

कोष्ठस्थधान्योपममेकबीजं संभिन्नसंश्रोतृपदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥२॥

संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादनाघ्राणविलोकनानि।
दिव्यान्मतिज्ञानबलाद्वहन्तः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥३॥

प्रज्ञाप्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः। प्रवादिनोऽष्टाङ्गनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥४॥

जङ्घावलिश्रेणिफलाम्बुतन्तुप्रसूनबीजाङ्कुरचारणाह्वाः।
नभोऽङ्गणस्वैरविहारिणश्च स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥५॥

अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि। मनोवपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं स्वस्ति [illegible]सु परमर्षयो नः ॥६॥

सकामरूपित्ववशित्वमैश्यं प्राकाम्य मन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः। तथाऽप्रतीघातगुणप्रधाना स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥७॥

दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोर पराक्रमस्थाः। ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरन्तः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥८॥

आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषविषादृष्टि विषं विषाश्च। सखिल्लविड्जल्लमलौषधीशा स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः ॥९॥

क्षीरं स्रवतोऽत्र घृतं स्रवन्तो मधु स्रवन्तोऽप्यमृतं स्रवन्त। अक्षीणसंवासमहानसाश्च स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः ॥१०॥

(इति स्वस्ति मंगलविधानं ।)

मार्वं सर्वज्ञनाथं सकलतनुभृतां पाप सन्तापहर्ता।
त्रैलोक्याक्रान्तकीर्तिः क्षतमदनरिपुर्घातिकर्मप्रणाशः॥
श्रीमन्निर्वाणसम्पद्वरयुवतिकरालीढकण्ठे सुकण्ठैर्देवेन्द्रैर्वन्द्यपादो जयति जिनपतिः प्राप्तकल्याणपूजः॥१॥

जय जय जय श्रीसत्कान्तिप्रभो जगतां पते। जय जय भवानेव स्वामी भवाम्भसि मज्जताम्॥ जय जय महामोहध्वान्तप्रभात कृतेऽर्चनम्। जय जय जिनेश त्वं नाथ प्रसीद करोम्यहम्॥२॥

ॐ ह्रीं भगवज्जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् (इत्याह्वाननं)
ॐ ह्रीं भगवज्जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ (इति स्थापनं)
ॐ ह्रीं भगवज्जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इति सन्निधिकरणं)

देवि! श्रीश्रुतिदेवते! भगवति! त्वत्पादपङ्केरुह
द्वन्द्वेयामि शिलीमुखत्वमपरं भक्त्या मया प्रार्थ्यते।
मातश्चेतसि तिष्ठ मे जिनमुखोद्भूते सदा त्राहि मां,
दृग्दानेनमयि प्रसीद भवति सम्पूजयामोऽधुना॥३॥

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत द्वादशाङ्ग श्रुतज्ञान अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत द्वादशाङ्ग श्रुतज्ञान अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ
ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत द्वादशाङ्ग श्रुतज्ञान अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

सपूजयामि पूज्यस्य पादपद्मयुगं गुरोः।
तपःप्राप्तप्रतिष्ठस्य गरिष्ठस्य महात्मनः॥४॥

ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुसमूह अत्र अवतर २ संवौषट्।
ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुसमूह अत्र तिष्ठ २ ठ ठ।
ॐ ह्रीं आचार्योपाध्यायसर्वसाधुसमूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

देवेन्द्रनागेन्द्रनरेन्द्रवन्द्यान् शुम्भत्पदान् शोभितसारवर्णान्। दुग्धाब्धिसंस्पर्धिगुणैर्जलौघैर्जिनेन्द्रसिद्धान्तयतीन् यजेऽहम् ।१॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणेऽनन्तानन्तज्ञानशक्तये अष्टादशदोषरहिताय षट्चत्वारिंशद्गुणसहिताय अर्हत्परमेष्ठिने जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भूत स्याद्वादनयगर्भितद्वादशाङ्ग श्रुतज्ञानाय जन्ममृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रादिगुणविराजमानाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यो जन्ममृत्युविनाशनाय जलंनिर्वपामीति स्वाहा।

ताम्यत्त्रिलोकोदरमध्यवर्त्ति समस्तसत्त्वाहितहारिवाक्यान्। श्रीचन्दनैर्गंधविलुब्धभृङ्गै र्जिनेन्द्रसिद्धान्तयतीनयजेऽहम्।।२॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अर्हत्परमेष्ठिने संसारतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्य चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

अपारससारमहासमुद्रप्रोत्तारणेप्राज्यतरीन् सुभक्त्या। दीर्घाक्षताङ्गैर्धवलाक्षतौघैर्जिनेन्द्रसिद्धान्त यतीन् यजेऽहम्।।३॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अर्हत्परमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानाय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।
ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

विनीतभव्याब्जविबोधसूर्यान्वर्यान् सुचर्याकथनैकधुर्यान् ।
कुन्दारविंदप्रमुखैः प्रसूनैर्जिनेन्द्र सिद्धान्तयतीन् यजेऽहम् ॥४॥

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिने कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।
ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

कुन्दर्पकन्दर्पविसर्प्पसर्प्पप्रसह्यनिर्णाशनवैनतेयान् ।
प्राज्याज्यसारैश्चरुभीरसाढ्यैर्जिनेन्द्र सिद्धान्त यतीन् यजेऽहम् ॥५॥

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिने क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।
ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्य नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ध्वस्तोद्यमान्धीकृतविश्वविश्वमोहांधकारप्रतिघातदीपान् ।
दीपैः कनत्काञ्चनभाजनस्थैर्जिनेन्द्रसिद्धान्तयतीन् यजेऽहम् ॥६॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अर्हत्परमेष्ठिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।
ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

दुष्टाष्टकर्मेन्धनपुष्टजालसधूपने भासुरधूमकेतून् ।
धूपैर्विधूतान्यसुगन्धगन्धैर्जिनेन्द्रसिद्धान्तयतीन् यजेऽहम् ॥७॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अर्हत्परमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।
ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यः धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

क्षुभ्यद्विलुभ्यन्मनसामगम्यान् कुवादिवादास्खलित-प्रभावान् । फलैरलं मोक्षफलाभिसारैर्जिनेन्द्रसिद्धान्तयतीन् यजेऽहम् ॥८॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अर्हत्परमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानाय फलं निर्वपामीति स्वाहा ।
ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

सद्वारिगन्धाक्षतपुष्पजातैर्नैवेद्यदीपामल धूपधूम्रैः ।
फलैर्विचित्रैर्घनपुण्ययोग्यान् जिनेन्द्रसिद्धान्तयतीन् यजेऽहम् ॥९॥

ॐ ह्रीं परमब्रह्मणे अर्हत्परमेष्ठिने अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ॐ ह्रीं श्रुतज्ञानाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।
ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

ये पूजां जिननाथशास्त्रयमिनां भक्त्या सदा कुर्वते ।
त्रैसन्ध्यं सुविचित्रकाव्यरचनामुच्चारयन्तो नराः ॥
पुण्याढ्या मुनिराजकीर्तिसहिता भूत्वा तपाभूषणा-
स्तेभव्याः सकलावबोधरुचिरांसिद्धिंलभंते पराम् ॥१०॥

इत्याशीर्वाद (पुष्पांजलि क्षेपण करना)

वृषभोऽजितनामा च संभवश्चाभिनंदन ।
सुमति पद्मभासश्च सुपार्श्वो जिनसत्तमः ॥ १ ॥
चंद्राभः पुष्पदन्तश्च शीतलो भगवान्मुनिः ।
श्रेयांश्च वासुपूज्यश्च विमलो विमलद्युति ॥२॥
अनन्तो धर्मनामा च शांति कुंथुर्जिनोत्तमः ।
अरश्च मल्लिनाथश्च सुव्रतो नमितीर्थकृत् ॥३॥
हरिवंश समुद्भूतोऽरिष्टनेमिर्जिनेश्वरः ।
ध्वस्तोपसर्गदैत्यारि पार्श्वो नागेन्द्र पूजित. ॥४॥
कर्मान्तकृन्महावीर सिद्धार्थकुलसम्भवः ।
एते सुरासुरौघेण पूजिता विमलत्विष ॥५॥
पूजिता भरताद्यैश्च भूपेन्द्रैर्भूरिभूरिभिः ।
चतुर्विधस्य संघस्य शान्ति कुर्वन्तु शाश्वतीम् ॥६॥

जिने भक्तिर्जिने भक्तिर्जिने भक्तिः सदाऽस्तु मे ।
सम्यक्त्वमेव संसार वारण मोक्षकारणम् ॥७॥

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्रुते भक्तिः श्रुते भक्तिः श्रुते भक्तिः सदाऽस्तु मे ।
सद्ज्ञानमेव संसार वारण मोक्षकारणम् ॥ ८ ॥

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

गुरौभक्तिर्गुरौ भक्तिर्गुरौ भक्तिः सदाऽस्तु मे ।
चारित्रमेव संसार वारण मोक्षकारणम् ॥ ९ ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

अथ देवजयमाला प्राकृत ।

वत्ताणुट्ठाणे जणधणुदाणे पइपोसिउ तुहु खत्तधरु ।
तुहु चरणविहाणे केवलणाणे तुहु परमप्पउ परमगुरु ॥ १ ॥
जय रिसह रिसीसर णमियपाय । जय अजिय जियंगमरोसराय ।
जय संभव संभवकयविओय । जय अहिणंदण णंदियपओय ॥२॥
जय सुमइ सुमइ सम्मयपयास । जय पउमप्पह पउमाणिवास ।
जय जयहि सुपास सुपासगत्त । जय चंदप्पह चंदाहवत्त ॥ ३ ॥
जय पुप्फयंत दंतंतरंग । जय सीयल सीयलवयणभंग ।
जय सेय सेयकिरणोहसुज्ज । जय वासुपुज्ज पुज्जाणपुज्ज ॥ ४ ॥
जय विमल विमल गुण सेढिठाण । जय जयहि अणंताणंतणाण ।
जय धम्म धम्मतित्थयर संत । जय संति संति विहियायवत्त ॥५॥

जय कुंथु कुंथुपहुअणिसदय। जय अर अर माहर विहियसमय।
जय मल्लिमल्लिआदामगंध। जय मुणिसुव्वय सुव्वयणिबंध ॥६॥
जय णमि णमियामरणियरसामि। जय णेमि धम्मरहचक्कणेमि।
जय पास पासछिंदणकिवाण। जय वड्ढमाण जसवड्ढमाण ॥७॥

घत्ता।

इह जाणिय णामहिं, दुरियविरामहिं, परहिवि णमिय सुरावलिहिं।
अणहणहिं अणाइहिं, समयकुवाइहिं, पणविवि अरहंतावलिहिं ॥८॥
ॐ ह्रीं वृषभादिमहावीरान्तेभ्योऽर्घं महार्घं निर्वपामिति स्वाहा ॥९॥

अथ शास्त्रजयमाला प्राकृत।

संपइ सुहकारण, कम्मवियारण, भवसमुद्दतारणतरणं।
जिणवाणि णमस्समि, सत्तपयस्समि सग्गमोक्खसंगमकरणं ॥
जिणंदमुहाउ विणग्गयसार। गणिंदविगुंफिय गंथपयार।
तिलोयहि मंडण धम्मह खाणि। सया पणमामि जिणिंदह वाणि॥
अवग्गहईह अवायजुयहि। सुधारणभेयहि तिण्णिसएहि॥
मइ छत्तीस बहुप्पमुहाणि। सयापणमामि जिणिंदह वाणि॥
सुदं पुण दोण्णि अणेयपयार। सुबारहभेय जगत्तयसार।
सुरिंदणरिंदसमच्चिय जाणि। सया पणमामि जिणिंदह वाणि॥
जिणिंदगणिंदणरिंदह रिद्धि। पयासइ पुण्णपुराकिउलद्धि।
णिउग्गु पहिल्लउ एहु वियाणि। सयापणमामि जिणिंदह वाणि॥
जुलोयअलोयह जुत्ति जणेइ। जुतिण्णि वि कालसरूव भणेइ।
चउग्गहलक्खण दुज्जउजाणि। सया पणमामि जिणिंदह वाणि॥
जिणिंद चरित्तविचित्त मुणेइ। सुसावयधम्महिं जुत्ति जणेइं।
णिउग्गुवि तिज्ज इत्थु वियाणि। सया पणमामि जिणिंदह वाणि॥
सुजीवअजीवह तच्चह चक्खु। सुपुण्ण विपाव विबंध विमुक्खु।
चउत्थुणिउग्गु विभासिय जाणि। सया पणमामि जिणिंदह वाणि

तिमेगहि ओहि णियाण विचित्तु । चउत्थु रिजोविउलमइ उत्तु ।
सुआइय केवलणाण णियाणि । सयापणमामि जिणिंदह वाणि ॥
जिणिंदह णाणु जगत्तयभाणु । महातमणासिय सुक्खणिहाणु ।
पयच्छु भत्ति भरेण णियाणि । सया पणमामि जिणिंदह वाणि ॥
पयाणि सुबारह कोडिसयेण । सुलक्खतिरासिय जुत्ति भरेण ।
सहस्सअठावण पच णियाणि । सया पणमामि जिणिंदह वाणि ॥
इकावण कोडिउ लक्ख अठेव । सहस चुलसीदिसया छक्केव ।
सढाइगवीसह गथपयाणि । सया पणमामि जिणिंदह वाणि ॥

घत्ता ।

इह जिणवर वाणिय विसुद्धमइ । जो भवियण णियमण धरइ ।
सो सुरणरिंद सपय लहिवि । केवलणाणि वि उत्तरई ॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोद्भूतस्याद्वादनयगर्भितद्वादशाङ्गश्रुतज्ञानाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अथ गुरु जयमाला प्राकृत ।

भवियह भवतारण, सोलह कारण, अज्जवि तित्थयरत्तणह ।
तव कम्म असगइ दय धम्मंगइ पालवि पंच महाव्वयह ॥ १ ॥
बंदामि महारिसि सीलवत, पंचेंदिय संजम जोग जुत्त ।
जे ग्यारह अगह अणुसरंति, जे चउदहपुव्वह मुणि थुणंति ॥२॥
पादाणु सारवर कुट्ठबुद्धि, उप्पण्णजाह आयासरिद्धि ।
जे पाणाहारी तोरणीय, जे रुक्खमूल आतावणीय ॥ ३

जे मोणिधाय चंदाइणीय, जे अत्यत्यवणि णिवासणीय ।
जे पंचमहव्वय धरणधीर, जे समिदिगुत्ति पालणहिं वीर ॥ ४ ॥
जे वट्टहि देह विरत्तचित्त, जे रायरोसभयमोहचत्त ।
जे कुगइहि संवरु विगयलोह, जे दुद्दियविणासण कामकोह ॥५॥
जे जल्लमल्लतिणलित्तगत्त, आरम्भ परिग्गह जे विरत्त ।
जे तिण्णकाल बाहर गमंति, छट्ठट्ठम दसमउ तउचरंति ॥६॥
जे इक्कगास दुइगास लिंति, जे णीरसभोयण रइ करंति ।
ते मुणिवर वंदउं ठियमसाण, जे कम्म डहइ वरसुक्कझाण ॥
बारहविह संजम जे धरंति, जे चारिउ विकहा परिहरंति ।
बावीस परीसह जे सहंति, संसार महण्णव ते तरंति ॥८॥
जे धम्मबुद्धि महियलि थुणंति, जे काउस्सग्गो णिस गमंति ।
जे सिद्धविलासणि अहिलसंति, जे पक्खमास आहार लिंति ॥९॥
गोदूहण जे वीरासणीय, जे धणुह सेज वज्जासणीय ।
जे तवबलेण आयास जंति, जे गिरिगुहकंदर विवर थंति ॥१०॥
जे सत्तुमित्त समभावचित्त, ते मुणिवर वंदउं दिढचरित्त ।
चौवीसह गंथह जे विरत्त, ते मुणिवर वंदउं जग पवित्त ॥११॥
जे सुज्झाणिज्झा एकचित्त, वंदामि महारिसि मोक्खपत्थ ।
रयणत्तयरंजिय सुद्धभाव, ते मुणिवर वंदउं ठिदिसहाव ॥१२॥

घत्ता ।

जे तपसूरा, संजमधीरा, सिद्धवधूअणुराइया ।
रयणत्तयरंजिय, कम्मह गंजिय, ते रिसिवर मइ झाइया ॥१३॥

ॐ ह्रीं श्रीसम्यग्दर्शनज्ञानचारित्रादिगुणविराजमानाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो महार्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ सिद्धपूजा ।

ऊर्द्ध्वाधोरयुतं सबिन्दुमपरं ब्रह्मस्वरावेष्टित
वर्गापूरितदिग्गताम्बुजदलं तत्संधितत्त्वान्वितम् ।
अन्तःपत्रतटेष्वनाहतयुत ह्रींकार संवेष्टितं
देव ध्यायति यः स मुक्तिसुभगो वैरीभकण्ठीरवः ॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते ! सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते ! सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः ।

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपते ! सिद्धपरमेष्ठिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

निरस्तकर्मसम्बन्धं सूक्ष्मं नित्यं निरामयम् ।
वन्देऽहं परमात्मानममूर्तमनुपद्रवम् ॥
(सिद्धयन्त्र की स्थापना)

सिद्धौ निवासमनुगं परमात्मगम्यं
हीनादिभावरहितं भववीतकायम् ।
रेवापगावरसरोयमुनोद्भवानां
नीरैर्यजे कलशगैर्वरसिद्धचक्रम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामि

आनन्दकन्दजनकं घनकर्ममुक्तं
सम्यक्त्वशर्मगरिमं जननार्तिवीतम् ।
सौरभ्यवासितभुवं हरिचन्दनानां
गन्धैर्यजे परिमलैर्वरसिद्धचक्रम् ॥२॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा ॥ २ ॥

सर्वावगाहनगुणं सुसमाधिनिष्ठं
सिद्धं स्वरूपनिपुणं कमलं विशालम् ।
सौगन्ध्यशालिवनशालिवराक्षतानां
पुञ्जैर्यजे शशिनिभैर्वरसिद्धचक्रम् ॥३॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ॥ ३ ॥

नित्यं स्वदेहपरिमाणमनादिसंज्ञं
द्रव्यानपेक्षममृतं मरणाद्यतीतम् ।
मन्दारकुन्दकमलादिवनस्पतीनां
पुष्पैर्यजे शुभतमैर्वरसिद्धचक्रम् ॥४॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ४ ॥

ऊर्द्ध्वस्वभावगमनं सुमनोव्यपेतं
ब्रह्मादिबीजसहितं गगनावभासम् ।

क्षीरान्नसाज्ययरकैः रसपूर्णगर्भै-
र्नित्यं यजे चरुवरैर्वरसिद्धचक्रम् ॥५॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने क्षुद्रोगविध्वंसनाय नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा ॥ ५ ॥

आतङ्कशोकभयरोगमदप्रशान्त
निर्द्वन्द्वभावधरणं महिमानिवेशम् ।
कर्पूरवर्तिबहुभिः कनकावदातै-
र्दीपैर्यजे रुचिवरैर्वरसिद्धचक्रम् ॥६॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ६ ॥

पश्यन्समस्तभुवनं युगपन्नितान्तं
त्रैकाल्यवस्तुविषये निविडप्रदीपम् ।
सद् द्रव्यगन्धघनसारविमिश्रितानां
धूपैर्यजे परिमलैर्वरसिद्धचक्रम् ॥७॥

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ७ ॥

सिद्धासुरादिपतियक्षनरेन्द्रचक्रै-
र्ध्येयं शिवं सकलभव्यजनैः सुवन्द्यम् ।
नारिङ्गपूगकदलीफलनारिकेलैः
सोऽहं यजे वरफलैर्वरसिद्धचक्रम् ॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीसिद्धचक्राधिपतये सिद्धपरमेष्ठिने मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ॥ ८ ॥

अडिल्ल छन्द ।

अविनाशी अविकार परमरसधाम हो ।
समाधान सर्वज्ञ सहज अभिराम हो ॥
शुद्धबोध अविरुद्ध अनादि अनन्त हो ।
जगतशिरोमणि सिद्ध सदा जयवंत हो ॥१॥
ध्यानअग्निकर कर्म कलंक सबै दहे ।
नित्य निरंजनदेव सरूपी ह्वै रहे ॥
ज्ञायकके आकार ममत्वनिवारिकै ।
सो परमातम सिद्ध नमूं सिर नायके ॥२॥

दोहा ।

अविचलज्ञानप्रकाशते, गुण अनंत की खान ।
ध्यान धरै सो पाइये, परमसिद्ध भगवान ॥३॥

इत्याशीर्वाद (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(यन्त्र प्रक्षालनम्)

नीचे लिखे मन्त्र को पढ़ कर यन्त्र का अभिषेक करे —

ॐ भूर्भुवः स्वरिह एतद्विघ्नौघ वारक यंत्रमहं परिषिञ्चयामि ।

(अथ स्थापना)

नीचे लिखे श्लोक और तीन मन्त्र पढ़कर यन्त्र की स्थापना करे।

परमेष्ठिन् जगत्त्राण करणे मङ्गलोत्तम ।
शरणा इह तिष्ठतमेसन्निहितोऽस्तुपावनाः ॥

ॐ ह्रीं अर्हन् असिआउसा मंगलोत्तमशरणभूता अत्र अवतरावतर संवौषट् आह्वानन। ॐ ह्रीं अर्हन् असिआउसा मगलोत्तम शरणभूता तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ स्थापनम् ॥ ह्रीं अर्हन् असिआउसा मगलोत्तमशरणभूता अत्र ममसन्निहितो भव २ वट् सन्निधापनम् ॥

पंकेरुहायातपरागपुंजसौगन्ध्यमद्भिः सलिलैः पवित्रैः ।
अर्हत्पदाभापित मगलादीन् प्रत्यूहनाशार्थ मह यजामि ॥

ॐ ह्रीं मंगलोत्तम शरणभूतेभ्य पंचपरमेष्ठिभ्यो जलं निर्वपा मीतिस्वाहा।

काश्मीरकर्पूरकृतद्रवेण, ससारतापापहृतौयुतेन ।
अर्हत्पदाभापित मगलादीन् प्रत्यूहनाशार्थ मह यजामि ॥

ॐ ह्रीं मगलोत्तम शरणभूतेभ्य पंचपरमेष्ठिभ्यो सुगधं निर्वपामीति स्वाहा ॥

शाल्यक्षतैरक्षतमूर्तिमद्भिरब्जादिवासेन सुगन्धिमद्भिः
अर्हत्पदाभापित मगलादीन् प्रत्यूहनाशार्थमहं यजामि ॥

ॐ ह्रीं मङ्गलोत्तम शरणभूतेभ्य पंचपरमेष्ठिभ्यः अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा ॥

कदम्बजात्यादिभवैः सुरद्रुमैर्जातैर्मतोजास्त्रिपाशदक्षैः ।
अर्हत्पदाभाषितमंगलादीन् प्रत्यूहनाशार्थमहं यजामि ॥
ॐ ह्रीं मंगलोत्तम शरणभूतेभ्यः पंचपरमेष्ठिभ्यो पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा ॥

पीयूषपिण्डश्चशशांककान्ति-
स्पर्धाद्भिरिष्टैर्नयनप्रियैश्च ।
अर्हत्पदाभाषित मंगलादीन्-
प्रत्यूहनाशार्थ मह यजामि ॥
ॐ ह्रीं मंगलोत्तम शरणभूतेभ्य पंचपरमेष्ठिभ्यो नैवेद्य निर्वपामीति स्वाहा ॥

ध्वस्तांधकारप्रसरैः सुदीपैर्घृ तोद्भवैरत्नविनिर्मितैर्वा ।
अर्हत्पदाभाषित मंगलादीन् प्रत्यूहनाशार्थ मह यजामि ॥
ॐ ह्रीं मंगलोत्तम शरणभूतेभ्य पंचपरमेष्ठिभ्यो दीपं निर्वपामीति स्वाहा ॥

स्वकीय धूपेन नभो रकाश, व्यपद्धिरुद्यैश्च सुगन्धधूपैः ।
अर्हत्पदाभाषित मंगलादीन प्रत्यूहनाशार्थमह यजामि ॥
ॐ ह्रीं मंगलोत्तम शरणभूतेभ्यो पंचपरमेष्ठिभ्यो धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

नारंगपूगादिफलैरनर्घ्यै-
र्हृन्मानसादिप्रियतर्पकैश्च ॥
अर्हत्पदाभाषित मंगलादीन्,
प्रत्यूहनाशार्थमह यजामि ॥
ॐ ह्रीं मंगलोत्तम शरणभूतेभ्य पंचपरमेष्ठिभ्यो फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रंभश्चंदननंदनाक्षततरूद्भूतैर्निवेद्यैर्वरैः ।
दीपैर्धूपफलोत्तमैः समुदितैरेभिः सुवर्णस्थितैः ॥

अर्हत्सिद्ध सुसूरिपाठकमुनीन्,
लोकोत्तमान्मंगलान् ।
सत्पूजोयनहृत्तये शुभकृतः,
सेव्येशरण्यानहम् ॥

ॐ ह्रीं मंगलोत्तमशरणभूतेभ्य पंचपरमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अथ प्रत्येक पूजनम् ।

कल्याणपञ्चककृतोदयमाप्तमीश
मर्हंतमच्युतचतुष्टयमासुरांगम् ।
स्याद्वादवागमृतसिन्धुशशांककोटि
मर्चे जलादिभिरनंतगुणालयस्थम् ॥

ॐ ह्रीं अनन्तचतुष्टयसमवशरणादिलक्ष्मीविभ्रते अर्हत्परमेष्ठिने अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

कर्माष्टकेन्धन चयं बहुतमपाशु हुत्वा ।
सद्ध्यानवह्निविसरे स्वयमात्मवन्तम् ॥
निश्रेयसामृतसरस्यथ सन्निनाय ।
संसिद्ध मुच्च पदद परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं अष्टकर्मकाष्ठगणभस्मीकृते सिद्धपरमेष्ठिने अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

स्वाचारपंचकमपि स्वयमाचरंति,
ह्याचारयंति भविकान् निज शुद्धभावः ॥
तानर्चयामिविविधैः सलिलादिभिश्च ॥
मत्यूहनाशनविधौ निपुणान्पवित्रैः ॥

ॐ ह्रीं पंचाचारपरायणाय आचार्यपरमेष्ठिनेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा

अगांगवाह्यपरिपाठन लालशाना ।
मष्टांगज्ञानपरिशीलनभाविनानाम् ॥
पादारविन्द युगल खलुपाठकानां ।
शुद्धैर्जलादिवसुभिः परिपूजयामि ॥

ॐ ह्रीं द्वादशांग पठनपाठनोद्यताय उपाध्याय परमेष्ठिनेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

आराधनासुखविलासमहेश्वराणां ।
सद्धर्मलक्षणमयात्मविकस्वराणां ॥
स्तोतुगुणान् गिरिवनादिनिवासिनां वै ।
एषोऽध्यतचरणपीठमुवनमामि ॥

ॐ ह्रीं त्रयोदशप्रकार चारित्राराधकसाधुपरमेष्ठिने अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

अर्हन्मंगलमर्चामि जगन्मंगलदायकम् ।
मारब्धकर्मविघ्नौघमलयायपयोमुखम् ॥

ॐ ह्रीं अर्हन्मंगलाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

चिदानन्दलसद्वीचि मालिन गुणशालिनम्।
सिद्धमंगलमर्चेह सलिलादिभिरुज्वलैः ॥

ॐ ह्रीं सिद्धमंगलाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

बुद्धिक्रियारसतपोविक्रियौषधिमुख्यकाः।
ऋद्धयोऽप नमोऽन्ति साधुमंगलमर्चये।

ॐ ह्रीं साधुमंगलाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

लोकालोक स्वरूप च प्रज्ञप्त धर्म मंगलम्।
अर्चेवादित्रनिर्घोषगीतनृत्यैः वनादिभिः॥

ॐ ह्रीं केवल प्रज्ञप्तधर्ममंगलाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

लोकोत्तमोऽर्हन् जगतां भवबाधाविनाशकः।
अर्च्यतेऽर्घेण सपर्या कुकर्मगणहानये॥

ॐ ह्रीं अर्हं लोकोत्तमार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

विश्वाग्रशिखर स्थायी सिद्धालोकोत्तमाश्रया।
महते महसामद्चिदानन्द मुमेदुरः॥

ॐ ह्रीं सिद्धलोकोत्तमार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

रागद्वेषपरित्यागी साम्य भावावबोधकः ।
साधुलोकोत्तमार्घेण पूज्यते सलिलाक्षतैः ॥

ॐ ह्रीं साधुलोकोत्तमाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

उत्तमक्षमया भास्वान् सधर्मो विष्टपोत्तमः ।
अनन्तसुखसंस्थाने यज्यतेऽम्भोऽक्षतादिभिः ।

ॐ ह्रीं केवलिप्रज्ञप्तधर्मलोकोत्तमाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

सदार्हन् शरणं मन्ये नान्यथा शरणं मम ।
इति भाव विशुद्ध्यर्थमर्हयामि जलादिभिः ॥

ॐ ह्रीं अर्हच्छरणाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

व्रजामि सिद्धशरणं परावर्तनपंचक ।
भित्वा स्वसुखसंदोहसंपन्नमिति पूजये ॥

ॐ ह्रीं सिद्धशरणाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

आश्रये साधुशरणं सिद्धान्त प्रतिपादने ।
न्यत्क्कृताज्ञानतिमिरमिति शुद्ध्यायजामितं ॥

ॐ ह्रीं साधुशरणाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

धर्म एव सदाबन्धुः स एव शरणं मम ।
इह वा यत्र संसारे इति तं पूजये धुना ॥

ॐ ह्रीं धर्मशरणाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

संसार दुःखहनने निपुण जनानां ।
नाद्यन्तचक्रमिति सप्तदशप्रमाणम् ॥
सपूजये विविधभक्तिभरावनम्रः ।
शांतिप्रदं भुवनमुख्यपदार्थ सार्थैः ॥
ॐ ह्रीं अर्हदादि सप्तदशाङ्गेभ्य महार्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

(पुष्प चढ़ाकर १० बार णमोकार मन्त्र पढ़े)

अथ जयमाला ।

विघ्नप्रणाशनविधौ सुरमर्त्यनाथा,
अग्रेसर जिन वदन्ति भवन्तमिष्टम् ॥
अनाद्यनन्त युगवर्तिनमत्र कार्ये,
गार्हस्थ्यधर्मविहितेऽहमपि स्मरामि ॥
गणानां मुनीनामधीशत्व तस्ते,
गणेशाख्यया ये भवन्त स्तुवन्ति ॥
सदा विघ्नसन्दोहशांतिर्जनानां,
करे संलुठत्यायतश्रेयसानाम् ॥
कलेः प्रभावात्कलुषाशयस्य,
जनेषु मिथ्यामदवासितेषु ॥

प्रवर्तितोऽन्यो गणराजनाम्ना,
लंबोदरो दंतिमुखो गणेशः ॥
रुद्रेन कामज्ज्वलितेन गौर्या,
विनोदभारान्मलमुत्क्षिपित्वा ॥
कृत्वापुराणन्विति वाचयित्वा
सम्मगल त कथमुद्गिरन्ति ॥
यतस्त्वमेवासि विनायको मे,
दृष्टेष्टयोगानवरुद्धभावः ॥
त्वन्नाममात्रेण पराभवंति,
विघ्नारयस्तर्हि किमत्रचित्रम् ॥

जय जय जिनराज त्वद् गुणान्कोव्यनक्ति,
यदिसुरगुरुरिन्द्र कोटिवर्षं प्रमाण ॥
यदितुमभिलपेद्वा पारमाप्नोति नो चेत्,
कतिथ इह मनुष्यः स्वल्पबुध्या समेतः ॥

ॐ ह्रीं अर्हदादि सप्तदश मंत्रेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ॥

श्रिय बुद्धिमनाकुल्य धर्मप्रीति विवर्धन,
गृहि धर्मे स्थितिर्भूयात् श्रेयसे मेऽदिशत्वरम् ॥
इत्याशीर्वाद ।

यहां का नवमह अर्घ्य, लगी चिट पर पढ़िये ।

नवदेव पूजा ।

(अथ नवग्रह अर्घ्य)

सूर्यः शौर्यगुणं शशी कुशलतां सन्मंगलं मंगलो ।
बुद्धिं सत्त्वगुणां बुधो विंतरतात्जीवः शुभोऽनीघनम् ॥
शुक्रः शुक्लतर यशोऽतिविपुलं मंदोप्यमंदश्चिरम् ।
राहुर्बाहुबलं महाप्र्यमहितः केतुर्महीकेतुताम् ॥

ॐ ह्रीं आदित्यादिनवग्रहदेवा सर्वेपि सन्तु प्रभूतीना शान्ति कुरुत २ स्वाहा ।

दत्तीर्था इव गाहनागुरुलघुपञ्चस्तवाघद्दुरम् ॥
ममानामि यजामि सन्ततमविध्यायामि गायामि तम् ।
सरनौमि प्रणमामि यामि शरणं सिद्धं विशुद्धं मष्टम् ।

ॐ ह्रीं श्रीसकलकर्मविमुक्ताय परमब्रह्मपरमेश्वराय सिद्धपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥

आचारवत्वादिगुणाष्टकार्य ।
दशप्रकारस्थितकल्पदीपम् ॥
द्विषट्तपःसद्द्दमाधपदधि- ।
राजश्यर्के सूरिमह नमामः ॥

ॐ ह्रीं षट्त्रिंशद्गुणान्वितश्रीमदाचार्यपरमेष्ठिनेऽर्घ्यं नि...

एकदशाङ्गकचतुर्दशपूर्वसर्व- ।
सम्यक् श्रुते, पठनपाठनपाटवो य'
कारुण्य पुण्यसरिदुद्गमभुद्रचित्तः ।
त पाठक मुनिमुदारगुण नमाव,

ॐ ह्रीं पचविंशतिगुणसमन्वितश्रीमदुपाध्यायपरमे निर्वदामीति स्वाहा ।

अस्नानभूशयनलोचविचेलतैक ।
भक्तोदभक्तरदघर्षणशुद्धवृत्तम् ॥
पचवृत्तोद्धसमितोन्द्रियरोधषट्स- ।
दावश्यकोत्तमपर प्रणमामि साधु

ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिगुणसमन्वितश्रीसाधुपरमेष्ठिने मीति स्वाहा ।

अर्हद्वचनप्रसूतं गणधररचित द्वादशाग विशाल
चित्र वह्वर्थयुक्त मुनिगणवृषभैर्धारित
मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतचरणफल ज्ञेयभावप्रदीप
भक्त्यानित्यप्रव दे श्रुतमहमखिल

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोत्पन्नाये
मीति स्वाहा ।

धर्म, सर्वसुखाकरो हितकरो
धर्मेणैव समाप्यते शिव

धर्मान्नास्ति परस्सुहृद्भवभृतां धर्मस्य मूलं दया ।
धर्मे चित्तमहं दधे प्रतिदिनं हे धर्म ! मां पालय ।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखकमलसमुद्भूतस्याद्वादनयगर्भितद्वादशांगश्रुतज्ञानाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

कृत्याकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान्नित्यं त्रिलोकीगतान् ।
वन्दे भावनव्यन्तरद्युतिवरस्वर्गामरावासगान् ॥
सद्गन्धाक्षत पुष्पचारुचरुभिर्दीपैश्च धूपैः फलैः ।
नीराद्यैश्च यजे प्रणम्य शिरसा दुष्कर्मणां शान्तये ॥
ॐ ह्रीं त्रिलोकवर्तिश्रीजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

यावन्तिजिनचैत्यानि, विद्यन्ते भुवनत्रये ।
तावन्ति सततं भक्त्या, त्रिःपरीत्य नमाम्यहम् ॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकवर्तिभ्य श्रीवीतरागप्रतिबिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सिद्धपूजा ।

स्थापना (इन्द्रवज्रा)

सिद्धान् प्रसिद्धान् वसुकर्ममुक्तान् ।
त्रैलोक्यशीर्षे स्थितचिद्विलासान् ॥

एकादशाङ्गचतुर्दशपूर्वसर्व- ।
सम्यक् श्रुते पठनपाठनपाटवो यः
कारुण्य पुण्यसरिदुद्भसमुद्रचित्तः ।
तं पाठकं मुनिमुदारगुणं नमामि ॥

ॐ ह्रीं पंचविंशतिगुणसमन्वितश्रीमदुपाध्यायपरमेष्ठिनेऽर्घ निर्वपामीति स्वाहा ।

अस्नानभूशयनलोचविचलतैर- ।
भक्तोदमक्तरदघर्षणशुद्धवृत्तम् ॥
पचव्रतोद्भमितीन्द्रियरोधषट्स ।
दावश्यकोत्तमपरं प्रणमामि साधुम् ॥

ॐ ह्रीं अष्टाविंशतिगुणसमन्वितश्रीसाधुपरमेष्ठिनेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

अर्हद्वक्त्रप्रसूतं गणधररचितं द्वादशांगं विशालम् ।
चित्रं बह्वर्थयुक्तं मुनिगणवृषभैर्धारितं बुद्धिमद्भिः ॥
मोक्षाग्रद्वारभूतं व्रतचरणफलं ज्ञेयभावप्रदीपम् ।
भक्त्यानित्यमथ दे श्रुतमहमखिलं सर्वलोकैकसारम् ॥

ॐ ह्रीं श्रीजिनमुखोत्पन्नायै भगवत्यै वाग्देव्यै अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

धर्मः सर्वसुखाकरो हितकरो धर्मं बुधाश्चिन्वते ।
धर्मेणैव समाप्यते शिवसुखं धर्माय तस्मै नमः ॥

धर्मान्नास्ति परस्सुहृद्भवभृतां धर्मस्य मूलं दया ।
धर्मे चित्तमहं दधे प्रतिदिनं हे धर्म ! मां पालय ।

ॐ ह्रीं अर्हन्मुखारविन्दवीतरागप्रणीतशाश्वतधर्माय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

कृत्याकृत्रिमचारुचैत्यनिलयान्नित्यं त्रिलोकीगतान् ।
वन्देभावनव्यन्तरद्युतिवरस्वर्गामरावासगान् ॥
सद्गन्धाक्षत पुष्पचारुचरुभिर्दीपैश्च धूपैः फलैः ।
नीराद्यैश्च यजेप्रणम्यशिरसा दुष्कर्मणां शान्तये ॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकवर्तिकृत्रिमाकृत्रिमजिनालयेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

यावन्ति जिनचैत्यानि, विद्यन्ते भुवनत्रये ।
तावन्ति सततं भक्त्या, त्रिःपरीत्य नमाम्यहम् ॥

ॐ ह्रीं त्रिलोकवर्तिभ्यः श्रीवीतरागप्रतिबिम्बेभ्योऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा ।

सिद्धपूजा ।

स्थापना (इन्द्रवज्रा)

सिद्धान् प्रसिद्धान् वसुकर्ममुक्तान् ।
त्रैलोक्यशीर्षे स्थितचिद्विलासान्

सद्ध्यापये भावविशुद्धिदातृन् ।
सन्मङ्गलमाज्यसमृद्धयेऽहम् ॥१॥

ॐ ह्रीं वसुकर्मनाशकसिद्धसमूह ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् । (इत्याह्वाननम्)

ॐ ह्रीं वसुकर्मनाशकसिद्धसमूह ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः (इति स्थापनम्)

ॐ ह्रीं वसुकर्मनाशकसिद्धसमूह ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (इति सन्निधापनम्)

ॐ ह्रीं नीरजसे नमः (भूमिशुद्धिः)
ॐ ह्रीं दर्पमथनाय नमः (जलम्)
ॐ ह्रीं शीलगन्धाय नमः (चन्दनम्)
ॐ ह्रीं अक्षताय नमः (अक्षतम्)
ॐ ह्रीं विमलाय नमः (पुष्पम्)
ॐ ह्रीं परमसिद्धाय नमः (नैवेद्यम्)
ॐ ह्रीं ज्ञानोद्योताय नमः (दीपम्)
ॐ ह्रीं श्रुतधूपाय नमः (धूपम्)
ॐ ह्रीं अभीष्टफलदाय नमः (फलम्)

(रथोद्धता)

अष्टकर्मगणनष्टकारकान्, अष्टकु दलितसुदष्टगायदान् ।
स्पष्टबोधपरिमीतविष्टपान्, अर्घतोऽघनशमाय पूजये ॥१॥

ॐ ह्रीं वसुकर्मरहितसिद्धेभ्योऽर्घ्यं निर्वपा ॥
इसके बाद बीच की कटनी में विराजमा

श्रुतपूजा ।
(रथोद्धता)

द्वादशांगमखिलं श्रुतं मया, पाणिपीडनमहोत्सवेऽधुना ।
पूजनेन यदि धर्मसम्भवो, द्वैधयैव जगतां प्रसीदति ॥१॥

ॐ ह्रीं द्वादशांगश्रुताया ऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इसके बाद तीसरी (ऊपर की) कटनी में विराजमान —

गुरु पूजा तथा धर्मचक्र पूजा ।
(रथोद्धता)

ऋद्धयो बलरसादि विक्रियो-, षध्यसक्षयमहानसादिकाः ।
यत्क्रमाम्बुरुहवासमाश्रिताः, तान्गुरूनभिमहामि वार्मुखैः ॥१॥

ॐ ह्रीं महर्द्धिधारकपरमर्षिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अष्टमंगलमिदं पदाम्बुजे, भासते शतसुमंगलीपदम् ।
धर्मचक्रमभिपूजये वरं, कर्मचक्रपरिनाशनाय तम् ॥१॥

ॐ ह्रीं धर्मचक्रायार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ॥१॥

इसके बाद अग्निकुण्ड में साथिये बनावे और ॐ लिखे और शुद्ध तथा शुष्क लकड़ियां (चन्दन सफेद, चन्दन लाल, ढाक की लकड़ियां, छीली हुई आक की लकड़ियां और कपूर) रक्खे और गार्हपत्य नाम की अग्नि प्रज्वलित करे और बाद में नीचे लिखे मंत्र से अर्घ प्रदान करे।

श्री तीर्थनाथपरिनिर्वृतिपूज्यकाले,
मागत्य वह्नि सुरपा मुकुटोल्लसद्भिः।
वह्निव्रजैर्जिनपदेहमुदारभक्त्या,
देहस्तदाग्निमहमर्चयितुं दधामि ॥१॥

ॐ ह्रीं चतुरस्रे तीर्थंकरकुण्डे गार्हपत्याग्नयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हवन विधि

पूजन के बाद यह क्रिया करनी चाहिये। हवनकुण्ड की रचना पूर्व में बताई जा चुकी है, उसके अनुसार तैयार कर लेना चाहिये। नीचे लिखे मंत्रों द्वारा ये कार्य गृहस्थाचार्य और करें।

सूत्र वेष्टन = ॐ ह्रीं पञ्चवर्णसूत्रेण त्रीन्वारान् वेष्टयामि स्वाहा। यह मंत्र बोलकर मंगल सूत्र एक दूसरी खूंटी से वेष्टित कर बांध दे।

इसके बाद गृहस्थाचार्य वर कन्या द्वारा पूजन करावें। इसी समय हवन कुण्ड के चारों ओर चार लघुकलश नीचे लिखा मंत्र पढ़कर स्थापित करें।

ॐ ह्रीं स्वस्तये चतुःकलशान् स्थापयामि स्वाहा

बाद में अग्निकुण्ड में अक्षत बिछाकर पुष्पों से अग्नि मंडल ॐ या स्वस्तिक बनाकर रक्खे। हवन की सब सामग्री को यथास्थान रखकर बाद में प्रासुक जल से तूल द्वारा भूमि का शोधन और सामग्री का शोधन नीचे लिखे मन्त्र द्वारा करे।

ॐ ह्रीं पवित्र तर जलेन शुद्धि करोमि स्वाहा। पीछे कुण्ड में समिधियां स्थापित कर दे और कपूर या डाभ के तूल से अग्नि संस्थापन मन्त्र को पढ़ कर अग्नि प्रज्वलित करे।

ॐ ॐ ॐ ॐ रं रं रं रं अग्नि संस्थापयामि स्वाहा।

अब आगे लिखे कुण्ड के पूजन को करना चाहिये।

श्री तीर्थनाथ परिनिर्वृति पूज्यकाले,
आगत्य वह्नि सुरपामुकुटाल्लसद्भिः।
वह्निव्रजैर्जिनपदेऽमुदारभक्त्या,
देहुस्तदाग्नि मरमर्चयितु दधामि ॥

ॐ ह्रीं प्रथमे चतुरस्रे तीर्थ कर कुण्डे गार्हपत्याग्नयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गणाधिपाना शिवमाप्तिकालेऽ
ग्नीन्द्रोत्तमाङ्ग स्फुरदाग्निरेषः।
संस्थाप्य पूज्यः समयाहनीयो
विवाह शान्तौ विधिना हुतीश.

ॐ ह्रीं द्वितीये वृत्ते गणधर कुण्डे आहवनीयाग्नयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीदक्षिणाग्नि परकेवलि
स्वशरीर निर्वाणसुताग्निदेव
किरीट संस्फुर दसौ मयापि
संस्थाप्य पूजामि विवाह शान्त्यै ।

ॐ ह्रीं त्रिकोणे सामान्य केवलिकुण्डे दक्षिणाग्नयेऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

इसके उपरान्त गृहस्थाचार्य निराकुलता से मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण करते हुए वर और कन्या के हाथ से घृत मिश्रित हवन द्रव्य की आहुतियां हवन कुण्ड में दिलावे ।

अथ पीठिका मंत्र ।

ॐ सत्यजाताय नमः ॥ १ ॥ ॐ अर्हज्जाताय नमः ॥२॥
ॐ परमजाताय नमः ॥३॥ ॐ अनुपमजाताय नमः ॥४
ॐ स्वप्रधानाय नमः ॥५॥ ॐ अचलाय नमः ॥६॥
ॐ अक्षयाय नमः ॥७॥ ॐ अव्याबाधाय नमः ॥८॥
ॐ अनन्तज्ञानाय नमः ॥९॥ ॐ अनन्तदर्शनाय नमः १०॥
ॐ अनन्तवीर्याय नमः ॥११॥ ॐ अनन्तसुखाय नमः ॥१२॥
ॐ नीरजसे नमः ॥१३॥ ॐ निर्मलाय नमः ॥१४॥
ॐ अच्छेद्याय नमः ॥१५॥ ॐ अभेद्याय नमः ॥१६॥
ॐ अजराय नमः ॥१७॥ ॐ अमराय नमः ॥१

ॐ अप्रमेयाय नमः ॥१९॥ ॐ अगर्भवासाय नमः ॥२०॥ ॐ अक्षोभाय नमः ॥२१॥ ॐ अविलीनाय नम' ॥२२॥ ॐ परमघनाय नमः ।२३। ॐ परमकाष्ठायोगरूपाय नम' ।२४। ॐ लोकाग्रवासिने नमोनम' ॥२५॥ ॐ परमसिद्धेभ्यो नमोनम ॥२६॥ ॐ अर्हत्सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥२७॥ ॐ केवलिसिद्धेभ्यो नमोनमः ॥२८॥ ॐ अतकृत्सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥ २९ ॥ ॐ परम्परासिद्धेभ्यो नमोनम. ॥३०॥ ॐ अनादिपरम्परा सिद्धेभ्यो नमोनमः ॥३१॥ ॐ अनाद्य नुपमसिद्धेभ्यो नमोनम. ॥३२॥ ॐ सम्यग्दृष्टे आसन्न-भव्यनिर्वाणपूजार्ह अग्नीन्द्राय स्वाहा ॥३३॥

(इस प्रकार ३३ आहुति देने के पश्चात् नीचे लिखा काव्य मन्त्र पढ़कर एक आहुति देवे और पुष्प ले अपने तथा सब पास बैठने वालों के ऊपर डाले)

सेवाफल षट्परमस्थान भवतु, अपमृत्युविनाशन भवतु, ~~समाधिमरण भवतु~~, स्वाहा ।

अथ जातिमंत्र ।

ॐ सत्यजन्मन शरण प्रपद्ये ॥१॥ ॐ अर्हज्जन्मनः शरण प्रपद्ये ॥२॥ ॐ अर्हन्मातुः शरण प्रपद्ये ॥३॥ ॐ अर्हत्सुतस्य शरण प्रपद्ये ।४॥ ॐ अनादिगमनस्यशरण प्रपद्ये ॥५॥ ॐ अनुपजन्मन. शरण प्रपद्ये ॥ ६ ॥ रत्नत्रयस्य शरण प्रपद्ये ॥ ७ ॥ ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे ज्ञानमूर्ते ज्ञानमूर्ते सरस्वति सरस्वति स्वाहा ॥ ८ ॥

(इस प्रकार [illegible] आहुति देने के पश्चात् नीचे लिखा आशीर्वाद-सूचक काम्यमंत्र पढ़ कर एक आहुति देवे ।)

सेवाफल षट्परमस्थान भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु स्वाहा ॥

अथ निस्तारकमंत्र ।

ॐ सत्यजाताय स्वाहा ॥१॥ ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ षट्कर्मणे स्वाहा ॥ ३ ॥ ॐ ग्रामपतये स्वाहा ॥४॥ ॐ अनादिश्रोत्रियाय स्वाहा ॥५॥ ॐ स्नातकाय स्वाहा ॥ ६ ॥ ॐ श्रावकाय स्वाहा ॥७॥ ॐ देवब्राह्मणाय स्वाहा ॥ ८ ॥ ॐ सुब्राह्मणाय स्वाहा ॥ ९ ॥ ॐ अनुपमाय स्वाहा ॥१०॥ ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे निधिपते निधिपते वैश्रवण वैश्रवण स्वाहा ॥ ११ ॥

(इस प्रकार ११ आहुति देने के पश्चात् नीचे लिखा आशीर्वाद सूचक काम्यमंत्र पढ़ कर एक आहुति देवे)

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु स्वाहा ।

अथ ऋषिमंत्र ।

ॐ सत्यजाताय नमः ॥१॥ ॐ
ॐ निर्ग्रन्थाय नमः ॐ वीतरागाय

ॐ महाव्रताय नमः ॥५॥ ॐ त्रिगुप्ताय नमः ॥६॥ ॐ महायोगाय नमः ॥७॥ ॐ विविधयोगाय नमः ॥८॥ ॐ विविधर्द्धये नमः ॥९॥ ॐ अंगधराय नमः ॥१०॥ ॐ पूर्वधराय नमः ॥११॥ ॐ गणधराय नमः ॥१२॥ ॐ परमर्षिभ्यो नमो नमः ॥१३॥ ॐ अनुपमजाताय नमोनमः ॥१४॥ ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे भूपते भूपते नगरपते नगरपते कालश्रमण कालश्रमण स्वाहा ॥१५॥

(इस प्रकार १५ आहुति देकर फिर नीचे लिखा आशीर्वाद सूचक काम्यमन्त्र पढकर एक आहुति देवे)

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, ~~समाधिमरणं भवतु,~~ स्वाहा ।

अथ सुरेन्द्रमन्त्र ।

ॐ सत्यजाताय स्वाहा ॥१॥ ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा ॥२॥ ॐ दिव्यजाताय स्वाहा ॥३॥ ॐ दिव्यार्चिजाताय स्वाहा ॥४॥ ॐ नेमिनाथाय स्वाहा ॥५॥ ॐ सौधर्माय स्वाहा ॥६॥ ॐ कल्पाधिपतये स्वाहा ॥७॥ ॐ अनुचराय स्वाहा ॥८॥ ॐ परम्परेंद्राय स्वाहा ॥९॥ ॐ अहमिन्द्राय स्वाहा ॥१०॥ ॐ परमार्हताय स्वाहा ॥११॥ ॐ अनुपमाय स्वाहा ॥१२॥ ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे कल्पपते कल्पपते दिव्यमूर्ते दिव्यमूर्ते वज्रनामन् वज्रनामन् स्वाहा ॥१३॥

(इस प्रकार १३ मन्त्रों की आहुति देने के पश्चात् नीचे लिखा आशीर्वादसूचक काम्यमन्त्र पढ़कर एक आहुति देवे ।

सेवाफल षट्परमस्थान भवतु, अपमृत्युविनाशन भवतु, समाधिमरणं भवतु, स्वाहा ।

परमराजादिमन्त्र ।

ॐ सत्यजाताय स्वाहा ॥१॥ ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा ॥२॥ ॐ अनुपमेंद्राय स्वाहा ॥३॥ ॐ विजयार्च्यजाताय स्वाहा ॥४॥ ॐ नेमिनाथाय स्वाहा ॥५॥ ॐ परमजाताय स्वाहा ॥६॥ ॐ परमार्हताय स्वाहा ॥७॥ ॐ अनुपमाय स्वाहा ॥८॥ ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे उग्रतेजः उग्रतेजः दिशांजन दिशांजन नेमिविजय नेमिविजय स्वाहा ॥९॥

(इस प्रकार ९ मंत्रों की आहुति देने के पश्चात् नीचे लिखा आशीर्वादसूचक काम्यमन्त्र पढ़ कर एक आहुति देवे)

सेवाफल षट्परमस्थान भवतु, अपमृत्युविनाशन भवतु, समाधिमरणं भवतु, स्वाहा ।

परमेष्ठिमन्त्र

ॐ सत्यजाताय नमः ॥१॥ ॐ अर्हज्जाताय ॥२॥ ॐ परमजाताय

ॐ महाव्रताय नमः ॥५॥ ॐ त्रिगुप्ताय नमः ॥६॥ ॐ महायोगाय नमः ॥७॥ ॐ विविधयोगाय नमः ॥८॥ ॐ विविधर्द्धये नमः ॥९॥ ॐ अंगधराय नमः ॥१०॥ ॐ पूर्वधराय नमः ॥११॥ ॐ गणधराय नमः ॥१२॥ ॐ परमर्षिभ्यो नमो नमः ॥१३॥ ॐ अनुपमजाताय नमोनमः ॥१४॥ ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे भूपते भूपते नगरपते नगरपते कालश्रमण कालश्रमण स्वाहा ॥१५॥

(इस प्रकार १५ आहुति देकर फिर नीचे लिखा आशीर्वाद सूचक काम्यमन्त्र पढकर एक आहुति देवे)

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, ~~समाधिमरणं भवतु,~~ स्वाहा।

अथ सुरेन्द्रमन्त्र।

ॐ सत्यजाताय स्वाहा ॥१॥ ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा ॥२॥ ॐ दिव्यजाताय स्वाहा ॥३॥ ॐ दिव्यार्चिजाताय स्वाहा ॥४॥ ॐ नेमिनाथाय स्वाहा ॥५॥ ॐ सौधर्माय स्वाहा ॥६॥ ॐ कल्पाधिपतये स्वाहा ॥७॥ ॐ अनुचराय स्वाहा ॥८॥ ॐ परपरेंद्राय स्वाहा ॥९॥ ॐ अहमिन्द्राय स्वाहा ॥१०॥ ॐ परमार्हताय स्वाहा ॥११॥ ॐ अनुपमाय स्वाहा ॥१२॥ ॐ सम्यग्दृष्टे

दिव्यमूर्ते दिव्यमूर्ते वज्रनामन् व ॥

(इस प्रकार १३ मन्त्रों की आहुति देने के पश्चात् नीचे लिखा आशीर्वादसूचक काम्यमंत्र पढ़कर एक आहुति देवें।

सेवाफल षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु, स्वाहा।

परमराजादिमन्त्र।

ॐ सत्यजाताय स्वाहा ॥१॥ ॐ अर्हज्जाताय स्वाहा ॥२॥ ॐ अनुपमेंद्राय स्वाहा ॥३॥ ॐ विजयार्च्यजाताय स्वाहा ॥४॥ ॐ नेमिनाथाय स्वाहा ॥५॥ ॐ परमजाताय स्वाहा ॥६॥ ॐ परमार्हताय स्वाहा ॥७॥ ॐ अनुपमाय स्वाहा ॥८॥ ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे उग्रतेजः उग्रतेजः दिशांजन दिशांजन नेमिविजय नेमिविजय स्वाहा ॥९॥

(इस प्रकार ९ मंत्रों की आहुति देने के पश्चात् नीचे लिखा आशीर्वादसूचक काम्यमन्त्र पढ़कर एक आहुति देवे)

सेवाफल षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, समाधिमरणं भवतु, स्वाहा।

परमेष्ठिमन्त्र

ॐ सत्यजाताय नमः ॥१॥ ॐ अर्हज्जाताय नमः ॐ परमजाताय नमः ॥३॥ ॐ परमार्हतायनमः ॥४॥

ॐ परमरूपाय नमः ॥५॥ ॐ परमतेजसे नमः ॥६॥
ॐ परमगुणाय नमः ॥७॥ ॐ परमस्थानाय नमः ॥८॥
ॐ परमयोगिने नमः ॥९॥ ॐ परमभाग्याय नमः ॥१०॥
ॐ परमर्द्धये नमः ॥११॥ ॐ परमप्रसादाय नमः ॥१२॥
ॐ परमकांक्षिताय नमः ॥१३॥ ॐ परमविजयाय नमः ॥१४॥ ॐ परमविज्ञानाय नमः ॥१५॥ ॐ परमदर्शनाय नमः ॥१६॥ ॐ परमवीर्याय नमः ॥१७॥ ॐ परमसुखाय नमः ॥१८॥ ॐ परमसर्वज्ञाय नमः ॥१९॥ ॐ अर्हते नमः ॥२०॥ ॐ परमेष्ठिने नमः ॥२१॥ ॐ परमनेत्रे नमो नमः ॥२२॥ ॐ सम्यग्दृष्टे सम्यग्दृष्टे त्रैलोक्यविजय त्रैलोक्य विजय धर्ममूर्त्ते धर्ममूर्त्ते धर्मनेमे धर्मनेमे स्वाहा ॥२३॥

(इस प्रकार २३ मंत्रों को आहुति देने के पश्चात् नीचे लिखा आशीर्वादसूचक काम्यमन्त्र पढ़ कर एक आहुति देवे)

सेवाफलं षट्परमस्थानं भवतु, अपमृत्युविनाशनं भवतु, ~~समाधिमरणं भवतु~~ स्वाहा ॥

धूपैः संधूपितानेक, कर्मभिर्धूपदायिनः ।
अर्चयामि जनाधीश, सदागमगुरून् गुरून् ॥१॥

ॐ ह्रीं श्रीमज्जिनश्रुतगुरुभ्यो नमः धूपम् ।

सुरभीकृतदिग्व्रातै र्धूपधूमैर्जगत्प्रियैः ।
यजामि जिनसिद्धेश, सूर्युपाध्यायसद्गुरून् ॥२॥

ॐ ह्रीं पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः धूपम् ।

मृद्वग्निसगमसमुज्वलतोरुधूमैः ।
कृष्णागुरुप्रमृतिसुन्दरवस्तुधूपैः ॥
भीत्यानटद्भिरिव तारुडवनृत्यमुच्चैः
कर्मारिदारुदहनं जिनमर्चयामि ॥३॥

ॐ ह्रीं अर्हत्परमेष्ठिने धूपम् ।

गोत्रक्षयसंभवसत्तसमवं, सद्गुरुलघुतारूपपरं ।
सर्गमसर्गमपीतमनुक्षण, मुञ्झितसर्गासर्गमरम् ॥
कृष्णागुरुधूपैः सुरभितभूपैधूमैः स्पष्टहरिद्रूपै—
र्यायजमःसिद्ध सर्वविशुद्ध बुद्धमरुद्धं गुणरुद्धम् ॥४॥

ॐ ह्रीं सिद्धिपरमेष्ठिने धूपम् ।

हुत्वास्वमप्यगुरुभिः सुरभीकृताशे–,
रग्नौ समुच्छलित संमृतचन्द्रधूपैः ।
सधूपयामि चरणं शरणं शरण्य ॥
पुण्यं भवभ्रमहरं गणिना मुनीनाम् ॥५॥

ॐ ह्रीं आचार्यपरमेष्ठिने धूपम् ।

सधूपिताखिलदिशोधनशङ्कयेह.
बर्हिव्रज स्वनटनादिव नर्तयद्भिः ।
मृद्वग्निसंगसितताग्रुरुधूपधूमैः,
श्रीपाठक क्रमयुग यजमामहामः ॥६॥

ॐ ह्रीं उपाध्यायपरमेष्ठिने धूपम् ।

स्वमग्नौ विनिक्षिप्य दांगध्यत्रयम्,
दशाशास्यमुच्चैं करोति त्रिसध्यम् ॥
सदुद्दामकृष्णागुरुद्रव्यधूपे ।
यजेसाधुसधुनरद्रव्यक्तरूपे. ॥७॥

ॐ ह्रीं साधुपरमेष्ठिने धूपम् ।

धूपैः संधूपितानककर्मभिर्धूपदायिनः ।
वृषभादिजिनाधीशान्, वर्द्धमानान्तकान्यजे ॥८॥

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशति जिनेभ्यो धूपम् ।

उपर्युक्त विधि से हवन करने के पश्चात् ।

ग्रन्थिबंधन (गठजोड़ा)

इसका अर्थ है कि वर और कन्या का आजन्म पर्य्यन्त लौकिक, धार्मिक और गार्हस्थिक सम्बंधन पूर्वक रहना । इसलिये इस कार्य को देव-गुरु शास्त्र, अग्नि और समस्त पंच, स्त्री, पुरुष समाज के समक्ष नीचे लिखा श्लोक पढ़कर करना चाहिये ।

अस्मिन्जन्म येषवधोद्वयोर्वै,
कामे धर्मे वा गृहस्थत्वमाजि ।
योगो जातःपंचदेवाग्नि साक्षी
जायापत्योरंचलग्रंथिबन्धात् ।

नोट—कन्या की ओढ़नी या साड़ी का सीधा पल्ला और वर का दुपट्टा (चीटली) लेकर कन्या के पल्ले में एक सुपारी

और अक्षत व चादी रुखकर सवासिनी या अन्य किसी सौभाग्यवती स्त्री द्वारा एक दूसरे से गांठ बांध देनी चाहिये।

हथलेवा

गृहस्थाचार्य अथवा कन्या का पिता सौभाग्यवती स्त्रियों द्वारा संस्कारित हल्दी से कन्या का बांया हाथ और वर का दाहिना हाथ लेपन करे और गृहस्थाचार्य कन्या का हाथ नीचे और वर का हाथ ऊपर रख दोनों के हाथ मिलावे अर्थात् हथलेवा जोड़े। पश्चात् कन्या का पिता अपनी शक्ति के अनुसार दहेज देवे और हथलेवा छुड़ा दिया जाव।

फेरे या सप्तपदी

गठजोड़ा और हथलेवा होने के पश्चात् सप्तपरमस्थान की प्राप्ति के लिये कन्या को आगे और वर को पीछे कर, उस संस्कार वेदी के चारों ओर छह फेरे दिलाने चाहियें पीछे छठे फेरे के समाप्त होने पर कन्या और वर को अपने स्थान पर खड़ा कर देना चाहिये। अब आगे बताई हुई वर और कन्या की ओर से प्रतिज्ञाएँ गृहस्थाचार्य को खुलासा कर बता देनी चाहिये। इन्हें सुन, समझ कर वर और कन्या परस्पर में प्रतिज्ञाबद्ध हों।

घर की तरफ से सात प्रतिज्ञाएँ ।

१ मम कुटुम्बजनानां यथायोग्य विनयशुश्रूषा करणीया ।

अर्थात् मेरे कुटुम्बियों की यथायोग्य सेवा, विनय, आदर सत्कार करना ।

२ ममाज्ञा न लोपनीया ।

अर्थात् मेरी आज्ञा को कभी भंग मत करना ।

३ कटु निष्ठुरवाक्यं न वक्तव्यम् ।

अर्थात् कड़ुवा और मर्मभेदी वचन मत बोलना ।

४ सत्पात्रादिजनेभ्यो गृहागतेभ्य आहारादिदाने कलुषित मनो न कार्यम् ।

अर्थात् सत्पात्रादि (मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका, आदि) के घर आने पर अपने मन को कलुषित मत करना ।

५ रात्रौ परगृहे न गंतव्यम् ।

अर्थात् रात को किसी दूसरे के घर पर मत जाना ।

६ बहुजनसकीर्णस्थान नगतव्यम् ।

अर्थात् जहां बहुत से आदमी जमा हो रहे हों ऐसे स्थान पर मत जाना ।

७ कुत्सितधर्मि मद्यपायिनां गृहे न गतव्यम् ।

अर्थात् जिनका आचरण और धर्म खराब है—ऐसे मद्यादि पीनेवाले और मिथ्याधर्म वालों के घर पर मत जाना ।

एतानि मदुक्तानि वचनानि यदि स्वीकारोषि तदा मम वामाङ्गी भव ।

अर्थात् यदि मेरी इन सातों शर्तों को तुम मंजूर करो तो मेरी पत्नी हो सकती हो ।

तब वधू कहे—

भगवतः कल्याणं करिष्यन्ति ।

अर्थात् ये समस्त प्रतिज्ञाएं मुझे मंजूर हैं ।

कन्या की तरफ से सात प्रतिज्ञाएँ ।

१ अन्यस्त्रीभिः सार्द्धं क्रीडा न करणीया ।
अर्थात् अन्य स्त्रियों के साथ क्रीडा मत करना ।

२ वेश्यागृहे नगंतव्यम् ।
अर्थात् वेश्यादि खराब स्त्रियों के घर पर मत जाना ।

३ द्यूतक्रीडा न कार्या ।
अर्थात् जूवा मत खेलना ।

४ सदुद्योगाद् द्रव्यमुपार्ज्य वस्त्राभरणै, रक्षणीया ।

अर्थात् न्यायानुकूल उद्योग धन्धे से धन कमाकर वस्त्राभरण से मेरी रक्षा करना ।

५ धर्मस्थानगमने न वर्जनीया ।

अर्थात् मन्दिर तीर्थ सेवादि धर्म स्थान पर जाने से मुझे मत रोकना ।

६ गुप्त वार्ता न करणीया ।

अर्थात् कोई बात मुझसे गुप्त मत करना ।

७ मम गुप्त वार्ता अन्याग्रे न कथनीया ।

अर्थात् मेरी गुप्त बात दूसरे के आगे प्रकाशित मत करना ।
'भगवन्त, कल्याण करिष्यन्ति' इति वरो वदेत् ।

अर्थात् इसके उत्तर में वर कहे कि ये सातों प्रतिज्ञाएँ मुझे मन्जूर हैं ।

इसके आगे सातवां फेरा हो । इस फेरे में वर आगे और कन्या पीछे होना चाहिये । क्योंकि छटे फेरे तक कन्या की कन्या ही संज्ञा रहती है किन्तु सातवें फेरे में वह वधू हो जाती है । कारण यह है कि अब वह पति द्वारा प्रतिज्ञाबद्ध हो चुकी है और पति की अनुगामिनी बन रही है ।

इसके बाद वधू को वर के वाम अङ्ग पर कर देना चाहिये । और गृहस्थाचार्य दोनों के मस्तक ऊपर पत्र सेपन करे तथा

वर अपने हाथ से वधू को जगालो की माला और पुष्पमाल पहिनावे इसके बाद वर और वधू बैठें नहीं वेदी के सामने खड़े रहैं।

ग्रहस्थाचार्य द्वारा उपदेश

हे दम्पति अब तुम पति पत्नी हुये हो। अब तुम्हारा याव जीवन को सम्बन्ध हुआ है। इसलिये तुम धर्म, अर्थ, काम को अविरोध रूप से सेवन करते हुए मोक्ष पुरुषार्थ को साधने के लिये प्रयत्नशील होना क्योंकि केवल धर्म, अर्थ और काम के सेवन से सन्मार्ग की प्राप्ति नहीं होती है। इससे इस प्रकार सुयोग के मिल जाने पर तुम्हें मोक्षमार्ग पर प्रवृत होना चाहिये।

तदन्तर गृहस्थाचार्य हाथ में कलश लेकर जल की धारा देता हुआ नीचे लिखा पुण्याहवाचन पढ़े।

ॐ पुण्याह पुण्याह। लोकोद्योतनकरा अतीतकाल-संजाता निर्वाणसागरमहासाधुविमलप्रभशुद्धाभश्रीधरसुद-त्तामलप्रभोद्धराग्निसन्मतिशिवकुसुमांजलिशिवगणोत्साहज्ञा-नेश्वर परमेश्वरविमलेश्वरयशोधरकृष्णमतिज्ञानमतिशुद्धमति-श्रीभद्रशांताश्चेति चतुर्विंशतिभूतपरमदेवाश्च वः प्रीयता प्रीयताम् ॥धारा ॥१॥

ॐ सम्प्रतिकालश्रेयस्करस्वर्गावतरणजन्माभिषेकपरि-

श्रीवृषभाजितशंभवाभिनंदनसुमतिपद्मप्रभसुपार्श्वचंद्रप्रभपुष्प-
दंतशीतलश्रेयोवासुपूज्यविमलानंतधर्मशांतिकुंथ्वरमल्लिमुनि-
सुव्रतनमिनेमिपार्श्ववर्द्धमानाश्चेति वर्तमानचतुर्विंशतिपरदेवाश्च
व. प्रीयतां प्रीयतां ॥ धारा ॥२॥

ॐ भविष्यत्कालाभ्युदयप्रभवा महापद्मसुरदेवसुप्रभस्वयंप्र-
भसर्वायुधजयदेवोदयदेवप्रभादेवोदङ्कदेवप्रश्नकीर्तिजयकीर्ति-
पूर्णबुद्धिनिःकषायविमलप्रभबहलनिर्मलचित्रगुप्तसमाधिगुप्त-
स्वयंभूकंदर्पजयनाथविमलनाथदिव्यवागनंतवीर्याश्चेति —
चतुर्विंशतिभविष्यत्परमदेवाश्च वः प्रीयतां प्रीयतां ॥धारा॥३॥

ॐ त्रिकालवर्तिपरमधर्माभ्युदयाः सीमंधरयुग्मंधरबाहु-
सुबाहुसंजातकस्वयंप्रभऋषभेश्वरानंतवीर्यसूरप्रभविशाल-
कीर्तिवज्रधरचंद्राननचंद्रबाहुभुजंगेश्वरनेमिप्रभवीरसेनमहाभद्र-
जयदेवाजितवीर्याश्चेति पंचविदेहक्षेत्रविहरमाणा विंशतिपरम-
देवाश्च व प्रीयतां प्रीयतां ॥ धारा ॥४॥

ॐ वृषभसेनादिगणधरदेवा वः प्रीयतां प्रीयतां ॥धारा॥५॥

ॐ कोष्ठबीजपादानुसारिबुद्धिसंभिन्नश्रोत्रप्रज्ञाश्रवणाश्च वः
प्रीयतां प्रीयतां ॥ धारा ॥६॥

ॐ आमर्षक्ष्वेडजल्लविड्सर्वौषधिऋद्धयश्च वः प्रीयतां
प्रीयतां ॥ धारा ॥७॥

ॐ जलफलजघातन्तुपुष्पश्रेणिपत्राग्निशिखाकाशचारणाश्च वः प्रीयतां प्रीयतां ॥ धारा ॥८॥

ॐ आहाररसवद्क्षीणमहानसालयाश्च वः प्रीयतां प्रीयतां॥ धारा ॥९॥

ॐ उग्रदीप्ततप्तमहाघोरानुपमतपसश्च वः प्रीयतां प्रीयतां॥ धारा ॥ १० ॥

ॐ मनोवाक्कायबलिनश्चवः प्रीयंतां प्रीयतां ॥ धारा ॥११॥

ॐ क्रियाविक्रियाधारिणश्चवः प्रीयतां प्रीयतां ॥धारा॥१२॥

ॐमतिश्रुतावधिमनःपर्ययकेवलज्ञानिनश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां धारा ॥१३॥

ॐ अंगांगबाह्यज्ञानदिवाकराः कुन्दकुन्दाद्यनेकदिगंबरदेवाश्च वः प्रीयंतां प्रीयंतां ॥ धारा ॥१४॥

इह वाऽन्यनगरग्रामदेवतामनुजाः सर्वे गुरुभक्ताः जिनधर्मपरायणा भवंतु ॥ धारा ॥१५॥

दानतपोवीर्यानुष्ठानं नित्यमेवास्तु ॥ धारा ॥१६॥

मातृपितृभ्रातृपुत्रपौत्रकलत्रसुहृत्स्वजनसंबंधिबंधुसहितस्य अमुकस्य * ते धनधान्यैश्वर्यबलद्युतियशः प्रमोदोत्सवाः प्रवर्द्धंतां ॥ धारा ॥१७॥

*इमकी नाम हो यह बोलना

शांतिधारा ।

तुष्टिरस्तु । पुष्टिरस्तु । वृद्धिरस्तु । कल्याणमस्तु
अविघ्नमस्तु । आयुष्यमस्तु । आरोग्यमस्तु । कर्मसिद्धिरस्तु ।
इष्टसंपत्तिरस्तु । कामपागल्योत्सवा: सन्तु । पापानि शाम्यन्तु ।
घोराणि शाम्यन्तु । पुण्यं वर्द्धतां । धर्मो वर्द्धताम् ।
श्रीर्वर्द्धताम् । कुलं गोत्रं चाभिवर्धताम् । स्वस्ति भद्रं चास्तु ।
क्ष्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा । श्रीमज्जिनेन्द्रचरणारविंदेष्वा-
नन्दभक्तिः सदास्तु ।

इस प्रकार मंगलकलश से धारा छोड़ते हुए पुण्याहवाचन के
होजाने पर वधू को वर के बायें तरफ करके बैठा देना चाहिए ।

निम्नलिखित मंगलाष्टक बोलना चाहिए ।

श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योतरत्नप्रभा ।
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः ॥
ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः ।
स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥१॥
नाभेयादिजिनाधिपास्त्रिभुवनख्याताश्चतुर्विंशतिः ।
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश ॥
ये विष्णुप्रतिविष्णुलांगलधराः सप्तोत्तरा विंशतिः ।
त्रैलोक्येप्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥२॥
ये पञ्चौषधऋद्धयः श्रुततपोवृद्धिंगताः पञ्च ये ।
ये चाष्टांगमहानिमित्तकुशलाश्चाष्टौवियाश्चारणाः ॥

पञ्चज्ञानधरास्त्रयेऽपि 'विपुला ये बुद्धिऋद्धीश्वराः ।
सप्तैते सकलार्चिता मुनिवराः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥३॥

ज्योतिर्व्यन्तरभावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः ।
जम्बूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षाररूप्याद्रिषु ॥
इक्ष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपे च नन्दीश्वरे ।
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥४॥

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही वीरस्य पावापुरे ।
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम् ॥
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो ।
निर्वाणावनयः प्रसिद्धविभवाः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥५॥

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो ।
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक् ॥
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा सम्पादितः स्वर्गिभिः ।
कल्याणानि च तानि पञ्च सततं कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥६॥

जायन्ते जिनचक्रवर्तिबलभृद्भोगीन्द्रकृष्णादयो ।
धर्मादेव दिगङ्गनाङ्गविलसच्छश्वद्यशश्चन्दनाः ॥
तद्धीनाः नरकादियोनिषु नराः दुःखं सहन्ते ध्रुवम् ।
सस्वर्गापवर्गसुखरमणीयरूपदं कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥७॥

सर्पो हारलता भवत्यसिलता सत्पुष्पदामायते ।
सम्पद्येत रसायनं विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपुः ॥

शांतिधारा ।

तुष्टिरस्तु । पुष्टिरस्तु । वृद्धिरस्तु । कल्याणमस्तु अविघ्नमस्तु । आयुष्यमस्तु । आरोग्यमस्तु । कर्मसिद्धिरस्तु । इष्टसंपत्तिरस्तु । कामयमांगल्योत्सवाः सन्तु । पापानि शाम्यन्तु । घोराणि शाम्यन्तु । पुण्यं वर्द्धतां । धर्मो वर्द्धताम् । श्रीर्वर्द्धताम् । कुलं गोत्रं चाभिवर्धताम् । स्वस्ति भद्रं चास्तु । झ्वीं क्ष्वीं हं सः स्वाहा । श्रीमज्जिनेंद्रचरणारविंदेष्वानन्दभक्तिः सदास्तु ।

इस प्रकार मंगलकलश से धारा छोड़ते हुए पुण्याहवाचन के होजाने पर वधू को वर के बायें तरफ करके बैठा देना चाहिए ।

निम्नलिखित मंगलाष्टक बोलना चाहिए ।

श्रीमन्नम्रसुरासुरेन्द्रमुकुटप्रद्योतरत्नप्रभा ।
भास्वत्पादनखेन्दवः प्रवचनाम्भोधींदवः स्थायिनः ॥
ये सर्वे जिनसिद्धसूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः ।
स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरवः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥१॥
नाभेयादिजिनाधिपास्त्रिभुवनख्यातश्चतुर्विंशतिः ।
श्रीमन्तो भरतेश्वरप्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश ॥
ये विष्णुप्रतिविष्णुलांगलधराः सप्तोत्तरा विंशतिः ।
त्रैलोक्येप्रथितास्त्रिषष्टिपुरुषाः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥२॥
ये पञ्चौषधऋद्धयः श्रुततपोवृद्धिंगताः पञ्च ये ।
चाष्टाङ्गमहानिमित्तकुशलाश्चाष्टौविधाश्चारणाः ॥

पञ्चज्ञानधराश्चयेऽपि 'विपुला ये बुद्धिऋद्धीश्वराः ।
सप्तैते सकलाश्चते मुनिवराः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥३॥

ज्योतिर्व्यन्तरभावनामरगृहे मेरौ कुलाद्रौ स्थिताः ।
जम्बूशाल्मलिचैत्यशाखिषु तथा वक्षाररूप्याद्रिषु ॥
इक्ष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे द्वीपेच नन्दीश्वरे ।
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥४॥

कैलासे वृषभस्य निर्वृतिमहीवीरस्य पावापुरे ।
चम्पायां वसुपूज्यसज्जिनपतेः सम्मेदशैलेऽर्हताम् ॥
शेषाणामपि चोर्जयन्तशिखरे नेमीश्वरस्यार्हतो ।
निर्वाणावनयः प्रसिद्धमहिताः कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥५॥

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां जन्माभिषेकोत्सवो ।
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो यः केवलज्ञानभाक् ॥
यः कैवल्यपुरप्रवेशमहिमा सम्भावितः स्वर्गिभिः ।
कल्याणानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु ते मंगलम्॥६॥

जायन्ते जिनचक्रवर्तिबलभृद्भोगीन्द्रकृष्णादयो ।
धर्मादेव दिगंगनांगविलसच्छश्वद्यशश्चन्दनाः ॥
तद्धीना' नरकादियोनिषु नराः दुःखं सहन्ते ध्रुवम् ।
सस्वर्गात्सुखरामणीयकपदं कुर्वन्तु ते मंगलम् ॥७॥

सर्पो हारलता भवत्यसिलता सत्पुष्पदामायते ।
सम्पद्येत रसायनं विषमपि प्रीतिं विधत्ते रिपुः ॥

देवा यान्ति वशं प्रसन्नमनसः किंवा बहुब्रूमहे ।
धर्मादेव नभोपि वर्षति नगैः कुर्वंतु ते मंगलम् ॥८॥
इत्थं श्रीजिनमंगलाष्टकमिदं सौभाग्यसंपत्करम् ।
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणांमुखा ॥
ये शृण्वन्ति पठन्ति ते च सुजनाः धर्मार्थकामान्विता ।
लक्ष्मीराश्रयते व्यपायरहिता कुर्वंतु ते मंगलम् ॥९॥

इति मंगलाष्टकम् ।

दीर्घायुरस्तु शुभमस्तु सुकीर्तिरस्तु,
सद्बुद्धिरस्तु धनधान्यसमृद्धिरस्तु ।
आरोग्यमस्तु विजयोऽस्तु महोस्तु पुत्र,-
पौत्रोद्भवोस्तु तव सिद्धिपतिप्रसादात् ॥१॥

तिलकमंत्र ।

मंगलं भगवान् वीरो मंगलं गौतमोगणी ।
मंगलं कुंदकुन्दाद्यो जैनधर्मोस्तु मंगलम् ॥१॥

~~हथलेवा छुडाना~~ ।

~~इसके बाद हथलेवा छुडाने का दस्तूर करके वर और वधू दोनों के हाथ से (विश्वशान्तिहेतुकं इत्यादि कसमाला बोलकर) अर्घ चढ़ावे और पुष्पांजलि क्षेपण करावे~~। तत्पश्चात्

शान्तिस्तव ।

भगति शांतिविवर्धनमंहसां,
प्रलयमस्तु जिनस्तवनेन मे ।
सुकृतबुद्धिरलं क्षमयायुतो,
जिनवृषो हृदये मम वर्तताम् ॥१॥
चिद्रूपभावमनवद्यमिम त्वदीय,
ध्यायन्ति ये सदुपधिव्यतिहारमुक्तम् ।
नित्य निरञ्जनमनादिमनन्तरूप,
तेषां महांसि भुवनत्रितये लसन्ति ॥२॥
ध्येयस्त्वमेव भवपञ्चतयप्रसार,-
निर्णाशकारणविधौ निपुणत्वयोगात् ।
आत्मप्रकाशकृतलोकतदन्यभाव,-
पर्यायविस्फुरणकृत्परमोऽसि यागी ॥३॥
त्वन्नाममन्त्रधनमुद्धतजन्मजात,-
दुःकर्मदावमभिशम्य शुभांकुराणि ।
व्यापादयत्यतुलभक्तिसमृद्धि भाजि,
स्वामिन्यतोऽसि शुभदः शुभकृत्त्वमेव ॥४॥
त्वत्पादतामरसकोपनिवासमास्ते,
चित्तद्विरेफसुकृतिप्रमयाबुदीश ।

तावच्च सम्सृतिजकिल्विषतापशापः,

स्थान मयि क्षणमपि प्रतिपाति कच्चित् ॥५॥

त्वन्नाममन्त्रमनिशं रसनाग्रवर्ति,

यस्यास्तियोदवदघूर्णननाशहेतु ।

यत्पूरराजिलगणोद्भवकालकूट.,

भीतिर्हि तस्य किमु सनिधिमेतिदेव ॥६॥

तस्मात्त्वमेव शरणं तरणं भवाब्धौ,

शान्तिप्रदः सकलदोषनिवारणेन ॥

जागर्ति शुद्धमनसा स्मरतो यतो मे,

शान्तिः स्वयं करतले रसमाभ्युपैति ॥७॥

पढता हुआ गृहस्थाचार्य शान्त्यर्थ जलधारा छोड़े । पश्चात्—

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय साधवः शान्ति पुष्टिं कुरु कुरु स्वाहा ॥

यह मंत्र बोलकर वर और वधू के मस्तक पर पुष्पाजलि क्षेपण करे और इसके बाद—

ॐ ह्रीं अस्मिन विवाहमांगल्यकर्मणि आहूयमानदेवगण. स्व स्थानं गच्छतु अपराधक्षमापनं भवतु ।

इस मन्त्र से विसर्जन करे—जलधारा छोड़े और पुष्पाञ्जलि क्षेपण करे ।

सासू का आरता करना ।

घर की सासू या सुआसिनी चतुर्मुख दीपक, अक्षत, रोली कलश आदि रखे हुए थाल को हाथ में लेकर जाया-पती का आरता करे और तिलक लगावे ।

गृहस्थाचार्य का आशीर्वाद ।

इस प्रकार आरता हो चुकने के पश्चात् गृहस्थाचार्य दो पुष्प मालाएँ (पुष्पों की न हो तो लवगों की) लेकर निम्नलिखित आशीर्वाद सूचक मन्त्र पढता हुआ वर और वधू दोनों को एक एक पहिना देवे ।

आरोग्यमस्तु चिरमायुरथो शचीव,
शक्रस्य शीतकिरणस्य च रोहिणीव ।
मेघेश्वरस्य च सुलोचनिका यथैषा,
भूयाच्चवेप्सितसुखानुभवोपदाश्री ॥ १ ॥

आयुः पुष्टिं करोतु प्रहरतु दुरितं मगलानि चिनोतु ।
सौभाग्यं वृद्धिमुच्चैर्नयतु वितरताद् वैभवं सचिनोतु ॥
रामापद्मामिरामा रमयतु सुयशः स्पष्टयित्वातनोतु ।
पुत्रं पौत्रं प्रताप प्रथयतु भवतामार्हतीभक्तिरुच्चैः ॥२॥

इसके पीछे—

सुचिरं जीवतादेवो जयतादभिनन्दतात् ।
प्रत्यावृत्य पुनश्चास्मान्रक्षतात्माभिरक्षतात् ॥१॥

यह बोलकर चारों दिशाओं में तथा ऊपर और नीचे भी पुष्प क्षेपण करे।

इसके बाद दुलहा और दुलहिन श्रीजिनमंदिर जी में जाकर अपने डेरे पर जावें।

विशेष विधान।

विवाहहोमे प्रक्रान्ते कन्या यदि रजस्वला।
त्रिरात्रिं दंपती स्यातां पृथक् शय्यासनाशने ॥ १ ॥
तुर्येऽह्नि स्नापयित्वा तां तस्मिन्नग्नौ यथाविधि।
विवाहहोमे कुर्यातां कन्यादानादिकं तथा ॥ २ ॥

अर्थात् अगर विवाह सम्बन्धी होम का समय निकट होने पर कन्या रजस्वला हो जाय तो वैवाहिक कार्य बंद करके उस दिन से तीन दिन तक वर कन्या को अलग अलग रखना चाहिए चौथे दिन स्नान करा कर समस्त होमादि क्रियाएँ करनी चाहिएँ।

फेरपाटा की विधि।

यद्यपि फेरपाटा की रीति शास्त्र सम्मत विधि नहीं है, क्योंकि किसी जैन विवाह पद्धति या तद्विषयक अन्य ग्रन्थ में इसका उल्लेख देखने में नहीं आता, परन्तु राजपूताने में इसकी प्रथा है, अतः इस पुस्तक में (~~पृष्ठ संख्या ९२ से~~) लिखी नवदेव पूजा कराकर इस विधि को करना चाहिये।

अन्य आवश्यक विधियां।

जैन शास्त्रों में अनेक संस्कारों का वर्णन है, परन्तु वर्तमान में उनका प्रचार नहीं है। अतः हमने अन्य संस्कारों के आवश्यक होते हुये भी यहाँ उन्हीं का उल्लेख करना उचित समझा है जो आज कल कराये जाते हैं।